CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2019 with Solution PDF-Set 2/1/1 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 2, 4, 6, 7, 8, 9, 11, 13 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

अगर कोई ज़िंदगी में सच न बोलने, सच स्वीकार न करने और सच का साथ न देने की कोई विवशता बताकर अपने हर कार्य, विचार और मकसद को सही साबित करने के लिए छल-छद्म और झूठ का सहारा ले और फिर भी सीना तानकर ख़ुद को सच्चाई का रहनुमा साबित करने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो, तो इससे किसका भला होगा ? वह यही करते रहे । फिर ढलती उम्र में अचानक एक दिन उनको अपनी ज़िंदगी में पीछे मुड़कर झाँकने का विचार आया । जब जागो, तभी सबेरा । अब ये वाकई ईमानदार और समाज के रहनुमा बनकर समाजसेवा कर सकते हैं । जीवन का सबसे बड़ा सच अपने कार्य और कर्तव्य को ईमानदारी से समझना और समाज की बेहतरी के लिए सोचना है । वे सोचने लगे, ढलती उम्र में अब क्यों उनको ज़िंदगी के इस कटु सच को स्वीकार करने के प्रति उत्सुकता बढ़ रही है ?

कुछ दार्शनिकों का कहना है कि आत्म-शक्ति से कमज़ोर, परम्परावादी और निहित स्वार्थ को महत्त्व देना मानवीय सरोकारों से ख़ुद को दूर करने जैसा है । आमतौर पर ज़िंदगी के सच से रूबरू होने और उसे स्वीकार करने का साहस हर किसी के पास नहीं होता । यह चेतना का उदारवादी लक्षण और भाव है, जो कहीं-कहीं और कभी-कभी ही दिखता है । अपने प्रति संवेदनहीन बने रहना मानव जीवन का सबसे बड़ा सच है । समाज को अपनी औकात दिखाने के लिए मुखौटे को ही वास्तविक रूप देने में न जाने कितने छल-छद्मों का सहारा हम लेते हैं । यह ज़िंदगी का सबसे बड़ा यथार्थ है, जो हम स्वयं से और समाज से छिपाने के लिए कृत्रिमता का सहारा लेते रहते हैं । [12 अंक]

1(क). 'सीना तानना' मुहावरे का क्या अर्थ है ? अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का अर्थ प्रसंग के अनुसार ग्रहण किया जाता है।
- वाक्य में प्रयोग से मुहावरे का अर्थ स्पष्ट होना चाहिए।

चरण 1: अर्थ पहचानना गद्यांश में व्यक्ति अपने छलपूर्ण आचरण के बावजूद स्वयं को सच्चाई का रहनुमा बताता है। यहाँ सीना तानने में गर्व और अकड़ का भाव है; इसका अर्थ केवल शरीर को सीधा करना नहीं है।

चरण 2: वाक्य में प्रयोग अपनी ईमानदारी पर गर्व करते हुए वह सीना तानकर सबके सामने खड़ा हो गया। इस वाक्य में मुहावरा गर्व के साथ निर्भय होकर खड़े होने का भाव प्रकट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'सीना तानना' का अर्थ है गर्व या अकड़ के साथ निर्भय होकर खड़ा होना। वाक्य: अपनी सफलता पर वह सीना तानकर मंच पर खड़ा हो गया।

त्वरित सुझाव: मुहावरे का शाब्दिक अर्थ लिखने के बजाय प्रसंग का गर्व या अकड़ का भाव पहचानें।

1(ख). 'ढलती उम्र' से क्या तात्पर्य है ? इसका विपरीतार्थक क्या होगा ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शब्दसमूह का अर्थ उसके प्रसंग से निश्चित होता है।
- विलोम शब्द मूल अर्थ की विपरीत अवस्था बताता है।

चरण 1: अर्थ समझना गद्यांश में जीवन के बहुत बाद के समय में पीछे मुड़कर देखने की बात है। अत: ढलती उम्र से आशय आयु के उस चरण से है जब व्यक्ति बुढ़ापे की ओर बढ़ रहा हो। यह दिन ढलने का वर्णन नहीं, जीवन की अवस्था का संकेत है।

चरण 2: विपरीत अवस्था बताना इसके विपरीत अवस्था युवावस्था की ओर बढ़ने की है। इसलिए ढलती उम्र का विपरीतार्थक चढ़ती उम्र होगा। दोनों पदों में आयु की परस्पर विपरीत अवस्थाएँ व्यक्त होती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष 'ढलती उम्र' का अर्थ है बुढ़ापे की ओर बढ़ती आयु। इसका विपरीतार्थक 'चढ़ती उम्र' है।

त्वरित सुझाव: अर्थ में वृद्धावस्था की ओर बढ़ना लिखें और विलोम में पूरा पद चढ़ती उम्र दें।

1(ग). कोई व्यक्ति प्रायः विवशता किस उद्देश्य से बताता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के आरंभ में विवशता और स्वार्थपूर्ण आचरण का संबंध स्पष्ट किया गया है।
- उत्तर व्यक्ति के बताए बहाने और उसके वास्तविक उद्देश्य को जोड़कर देना चाहिए।

चरण 1: संबंधित प्रसंग पहचानना लेखक ऐसे व्यक्ति की बात करता है जो सत्य न बोलने, सत्य स्वीकार न करने और सत्य का साथ न देने के पीछे अपनी विवशता बताता है। यह विवशता वह अपने कार्यों की जिम्मेदारी से बचने के लिए सामने रखता है। प्रश्न सामान्य कठिनाइयों का नहीं, गद्यांश में बताए इस आचरण के उद्देश्य का है।

चरण 2: उद्देश्य स्पष्ट करना वह अपने हर कार्य, विचार और मकसद को सही सिद्ध करना चाहता है। इसलिए छल, छद्म और झूठ का सहारा लेने के बावजूद अपनी छवि सच्चाई के रहनुमा की बनाए रखने का प्रयत्न करता है। विवशता बताना उसके गलत व्यवहार को उचित ठहराने का बहाना बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष व्यक्ति प्रायः सत्य से विमुख रहने तथा अपने गलत कार्य, विचार और उद्देश्य को सही ठहराने के लिए विवशता बताता है। वह छल और झूठ को उचित सिद्ध करके स्वयं को सच्चा दिखाना चाहता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल मजबूरी न लिखें; उसके पीछे गलत काम को सही ठहराने का उद्देश्य अवश्य बताएं।

1(घ). किस प्रवृत्ति और आचरण से किसी का भला नहीं हो सकता ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में सत्य से विमुखता को छलपूर्ण आचरण के साथ जोड़ा गया है।
- दिखावटी समाजसेवा और वास्तविक ईमानदारी का अंतर समझना आवश्यक है।

चरण 1: प्रवृत्ति पहचानना सत्य न बोलना, सत्य को स्वीकार न करना और सत्य का साथ न देना ऐसी प्रवृत्ति है जिसमें व्यक्ति ईमानदारी से अपने कार्यों की जाँच नहीं करता। वह अपनी सुविधा और स्वार्थ को आगे रखता है तथा विवशता का बहाना बनाकर गलत काम को भी सही सिद्ध करने लगता है।

चरण 2: आचरण का परिणाम समझना जब कोई अपने हर कार्य, विचार और उद्देश्य को सही साबित करने के लिए छल, छद्म और झूठ का सहारा ले तथा फिर भी अकड़कर स्वयं को सच्चाई का रहनुमा बताए, तो उसकी ईमानदारी केवल दिखावा रह जाती है। ऐसे व्यवहार में समाज की बेहतरी की सच्ची भावना नहीं होती, इसलिए उससे किसी का वास्तविक भला नहीं हो सकता।

चरण 3: निष्कर्ष सत्य से मुँह मोड़ने, अपने स्वार्थ और गलत कामों को छल तथा झूठ से सही सिद्ध करने और फिर स्वयं को सच्चाई का रहनुमा बताने की प्रवृत्ति तथा आचरण से किसी का भला नहीं हो सकता।

त्वरित सुझाव: तीन बातें जोड़ें: सत्य से विमुखता, छल और झूठ का सहारा, तथा सच्चाई के रहनुमा होने का दिखावा।

1(ङ). आशय स्पष्ट कीजिए : 'जब जागो, तभी सबेरा' । इस कहावत का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहावत का भावार्थ उसके शाब्दिक अर्थ से आगे जाकर समझना चाहिए।
- प्रश्न के दोनों पक्ष, आशय तथा गद्यांश का संदर्भ, अलग-अलग स्पष्ट होने चाहिए।

चरण 1: कहावत का आशय जब जागो, तभी सबेरा का आशय है कि मनुष्य को जब भी अपनी भूल का बोध हो और वह उसे सुधारने के लिए तैयार हो जाए, तभी से उसके जीवन में अच्छे परिवर्तन का आरंभ हो सकता है। बीती हुई आयु के कारण सुधार की संभावना समाप्त नहीं होती। यहाँ जागना आत्मबोध और सबेरा नई शुरुआत का प्रतीक है।

चरण 2: गद्यांश से संदर्भ जोड़ना गद्यांश में व्यक्ति अब तक सच से दूर रहकर छल और झूठ का सहारा लेता रहा है। ढलती उम्र में उसे अपने जीवन को पीछे मुड़कर देखने और कटु सत्य को स्वीकार करने का विचार आता है। लेखक इसी प्रसंग में कहता है कि अब भी वह अपने कार्य और कर्तव्य ईमानदारी से समझकर समाज की बेहतरी के लिए काम कर सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष कहावत का अर्थ है कि भूल का बोध होते ही सुधार की शुरुआत की जा सकती है। यहाँ इसका प्रयोग ढलती उम्र में आत्मचिंतन करने वाले व्यक्ति के संदर्भ में हुआ है, जो अब भी ईमानदार बनकर समाजसेवा कर सकता है।

त्वरित सुझाव: आशय लिखने के बाद ढलती उम्र, आत्मबोध और ईमानदार समाजसेवा का संदर्भ अवश्य जोड़ें।

1(च). चेतना का दुर्लभ उदारवादी लक्षण क्या है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सर्वनाम और संकेतों का अर्थ उनसे ठीक पहले आए कथन से स्पष्ट होता है।
- दुर्लभता का कारण गद्यांश में दिए साहस के अभाव से समझना चाहिए।

चरण 1: संकेत का अर्थ स्पष्ट करना गद्यांश में पहले कहा गया है कि जिंदगी के सच से रूबरू होने और उसे स्वीकार करने का साहस हर किसी में नहीं होता। इसके तुरंत बाद इसी भाव को चेतना का उदारवादी लक्षण कहा गया है। अतः उत्तर का आधार सत्य का सामना करना और उसे स्वीकार करना है, केवल दूसरों की कमियाँ देखना नहीं।

चरण 2: दुर्लभता का कारण बताना व्यक्ति अक्सर अपने स्वार्थ और कृत्रिम छवि को बनाए रखने के लिए वास्तविकता से बचता है। सच स्वीकार करने के लिए अपनी भूलों और कमजोरियों को ईमानदारी से देखने का साहस चाहिए। यह साहस सभी में नहीं मिलता; इसलिए लेखक कहता है कि ऐसा उदार भाव कहीं-कहीं और कभी-कभी ही दिखाई देता है।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन के सच से रूबरू होने और उसे साहसपूर्वक स्वीकार करने की क्षमता चेतना का दुर्लभ उदारवादी लक्षण है। यह सभी में नहीं होती, इसलिए कहीं-कहीं और कभी-कभी ही दिखाई देती है।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के यह शब्द से ठीक पहले का कथन पढ़ें; वही उदारवादी लक्षण की सीधी पहचान देता है।

1(छ). जीवन का सबसे बड़ा यथार्थ किसे कहा गया है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में यथार्थ की पहचान और उसका कारण दोनों अपेक्षित हैं।
- अंतिम पंक्तियों में मुखौटे और कृत्रिमता के संबंध से उत्तर बनता है।

चरण 1: यथार्थ पहचानना गद्यांश के अंत में बताया गया है कि मनुष्य समाज के सामने अपनी छवि स्थापित करने के लिए मुखौटे को ही वास्तविक रूप देने लगता है। वह इसके लिए अनेक छल और छद्म अपनाता है। अपने प्रति संवेदनहीन रहते हुए कृत्रिम रूप को सच्चा सिद्ध करने का यही व्यवहार जीवन के सबसे बड़े यथार्थ के रूप में सामने आता है।

चरण 2: कारण समझना मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप और आचरण को स्वयं से तथा समाज से छिपाना चाहता है। अपनी कमजोरियों और वास्तविकता का सामना करने के बजाय वह ऐसी बाहरी छवि बनाता है जो उसे दूसरों के सामने अच्छा या बड़ा दिखाए। इसी छिपाव

के लिए वह कृत्रिमता का सहारा लेता रहता है; गद्यांश इसे जीवन का व्यापक वास्तविक व्यवहार मानता है।

चरण 3: निष्कर्ष समाज में अपनी छवि दिखाने के लिए मुखौटे को वास्तविक रूप देना और उसके लिए छल-छद्म तथा कृत्रिमता का सहारा लेना जीवन का सबसे बड़ा यथार्थ कहा गया है, क्योंकि मनुष्य अपना वास्तविक स्वरूप स्वयं से और समाज से छिपाता रहता है।

त्वरित सुझाव: क्या और क्यों दोनों लिखें: पहले मुखौटे को वास्तविक बनाना, फिर वास्तविक स्वरूप छिपाने का कारण।

---

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

प्रेम पिता का दिखाई नहीं देता
ज़रूर दिखाई देती होंगी नसीहतें
नुकीले पत्थरों-सी
दुनिया भर के करोड़ों पिताओं की लंबी कतार में
पता नहीं कौन-सा नंबर है मेरा
पर बच्चों के फूलों वाले बग़ीचे की दुनिया में
तुम अव्वल हो पहली क़तार में मेरे लिए
मुझे माफ़ करना मैं अपनी मूर्खता और प्रेम में समझता था
मेरी छाया के तले ही सुरक्षित रंग-बिरंगी दुनिया होगी तुम्हारी
अब जब तुम सचमुच की दुनिया में निकल गई हो
मैं ख़ुश हूँ सोचकर
कि मेरी भाषा के अहाते से परे है तुम्हारी परछाई । [4 अंक]

2(क). टिप्पणी कीजिए : "प्रेम पिता का दिखाई नहीं देता" [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में पिता का स्नेह सीधे प्रदर्शन के बजाय उसके व्यवहार में छिपा हुआ है।
- कठोर दिखाई देने वाली नसीहतों के पीछे संतान की सुरक्षा की चिंता है।

चरण 1: प्रत्यक्ष व्यवहार पहचानिए कवि कहता है कि पिता का प्रेम दिखाई नहीं देता, जबकि उसकी नसीहतें दिखाई देती हैं। इससे स्पष्ट है कि संतान को पहले उपदेश और रोकने का स्वर अनुभव होता है।

चरण 2: भीतर का भाव समझिए पिता अपनी छाया में बच्चे की दुनिया को सुरक्षित रखना चाहता था। इसलिए उसके उपदेशों की कठोरता के भीतर बच्चे के प्रति गहरा प्रेम और उसकी भलाई की इच्छा छिपी है।

चरण 3: निष्कर्ष पिता का प्रेम प्रायः खुलकर व्यक्त नहीं होता; वह संतान के हित में दी गई कठोर नसीहतों और सुरक्षा की चिंता में छिपा रहता है।

त्वरित सुझाव: प्रेम और नसीहत वाली पंक्तियों को साथ पढ़कर बाहरी कठोरता के पीछे छिपी चिंता बताइए।

2(ख). पिता किस बात के लिए क्षमा माँग रहा है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पिता अपनी पुरानी धारणा को प्रेम से उपजी भूल मानता है।
- उत्तर में क्षमा माँगने का वही कारण बताना है जो काव्यांश में स्पष्ट है।

चरण 1: पुरानी धारणा पहचानिए पिता को लगता था कि उसकी छाया के तले ही संतान की रंग-बिरंगी दुनिया सुरक्षित रह सकती है। वह सुरक्षा को अपने संरक्षण की सीमा से जोड़कर देखता था।

चरण 2: क्षमा का कारण समझिए संतान के वास्तविक दुनिया में निकलने पर पिता उसकी स्वतंत्र पहचान को स्वीकार करता है। वह क्षमा इसलिए माँगता है कि प्रेम और अपनी नासमझी में उसने केवल अपने संरक्षण को उसकी सुरक्षा का आधार मान लिया था।

चरण 3: निष्कर्ष पिता इस भूल के लिए क्षमा माँग रहा है कि उसने प्रेमवश समझ लिया था कि केवल उसकी छाया में ही संतान की दुनिया सुरक्षित रह सकती है।

त्वरित सुझाव: क्षमा वाले प्रश्न में "मेरी छाया के तले ही की धारणा और पिता की नई समझ का संबंध लिखिए।

2(ग). 'नसीहत' किसे कहते हैं ? उन्हें पत्थरों-सी क्यों कहा ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नसीहत का अर्थ किसी की भलाई के लिए दी जाने वाली सीख या सलाह है।
- नुकीले पत्थर की उपमा से उपदेशों की अनुभूत कठोरता स्पष्ट होती है।

चरण 1: शब्द का अर्थ बताइए नसीहत वह सीख या उपदेश है जो किसी को सही आचरण और सावधानी का मार्ग बताने के लिए दिया जाता है। यहाँ पिता संतान की भलाई के लिए ऐसी सीख देता है।

चरण 2: उपमा का आधार समझिए नुकीला पत्थर चुभता है और असुविधा पहुँचाता है। उसी प्रकार पिता की रोकने और समझाने वाली बातें संतान को कठोर तथा चुभने वाली लग सकती हैं। इसीलिए प्रेमपूर्ण उद्देश्य वाली नसीहतों को भी पत्थरों-सा कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष नसीहत का अर्थ सीख या उपदेश है। पिता की नसीहतें संतान को कठोर और चुभने वाली लगती हैं, इसलिए उन्हें नुकीले पत्थरों-सा कहा गया है।

त्वरित सुझाव: उपमा समझाते समय पत्थर और नसीहत का साझा गुण "चुभने वाली कठोरता स्पष्ट कीजिए।

2(घ). आशय समझाइए : "मेरी भाषा के अहाते से परे है तुम्हारी परछाई ।" [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में अहाता पिता के अनुभव, सोच और अभिव्यक्ति की सीमा का बिंब है।
- संतान का बाहर निकलना उसके स्वतंत्र जीवन और पहचान के विकास का संकेत है।

चरण 1: बिंब का अर्थ पहचानिए अहाता एक सीमाबद्ध क्षेत्र होता है। पिता की भाषा का अहाता उसके परिचित संसार, अनुभव और समझ की सीमाओं को प्रकट करता है। संतान अब उन्हीं सीमाओं में बँधी हुई नहीं है।

चरण 2: पिता की प्रसन्नता स्पष्ट कीजिए संतान सचमुच की दुनिया में निकलकर अपना जीवन बना रही है। पिता इस बात से प्रसन्न है

कि उसका व्यक्तित्व पिता की सोच और संरक्षण से आगे विकसित हुआ है। यहाँ परछाई संतान की स्वतंत्र उपस्थिति का संकेत देती है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय है कि संतान पिता की सोच, अनुभव और संरक्षण की सीमाओं से आगे निकलकर अपनी स्वतंत्र पहचान बना रही है; पिता उसकी इस प्रगति से प्रसन्न है।

त्वरित सुझाव: "अहाते को सीमा और उससे बाहर जाती "परछाई को संतान की स्वतंत्र पहचान से जोड़कर अर्थ खोलिए।

अथवा

2 अथवा. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

जहाँ विपुल विश्व की माया,
विनाशशील नर्तन में
क्षण-क्षण बदल रही है अपनी काया
पल-पल जी रही है नवीना बनकर
वायु के चरण भी काँप रहे हैं,
विस्तृत मरु की नीरवता-सी,
लहरियाँ लोट रही हैं धरा पर
घायल विक्षुब्ध सर्पिणियों-सी, ऐसे में
तुम्हारे लिए ऐसी जगह मैं कहाँ से लाऊँ
जहाँ तुम खेल सको निर्भय, हर्षित होकर । [4 अंक]

2(क). कविता में संसार को कैसा बताया गया है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में संसार की प्रकृति का परिचय उसके बदलते रूप और विनाशशील गति से मिलता है।
- उत्तर का आधार संसार के विषय में प्रयुक्त विशेषण और परिवर्तन का वर्णन है।

चरण 1: मुख्य संकेत पहचानिए कवि ने विश्व की माया को विपुल कहा है और उसके नर्तन को विनाशशील बताया है। इससे संसार का विस्तार और उसकी अस्थिरता दोनों सामने आते हैं।

चरण 2: स्वरूप स्पष्ट कीजिए संसार क्षण-क्षण अपनी काया बदलता है। यहाँ किसी रूप के सदा एक जैसा बने रहने की बात नहीं है; परिवर्तन के साथ पुराने रूप का नाश और नए रूप का जन्म जुड़ा है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता में संसार को विशाल, विनाशशील और निरंतर परिवर्तनशील बताया गया है।

त्वरित सुझाव: संसार का स्वरूप लिखते समय विपुल, विनाशशील और बदलती काया वाले संकेतों को जोड़िए।

2(ख). क्षण-प्रतिक्षण किसे नवीनता प्राप्त हो रही है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश का उत्तर उसी संज्ञा से मिलता है जिसके लिए काया बदलने और नवीन बनने का वर्णन है।
- क्षण-क्षण और पल-पल शब्द परिवर्तन के निरंतर होने का बोध कराते हैं।

चरण 1: पंक्तियों का संबंध देखिए विश्व की माया के विषय में कवि कहता है कि वह क्षण-क्षण अपनी काया बदल रही है। अगली पंक्ति में उसी के पल-पल नवीना बनकर जीने की बात है।

चरण 2: नवीनता का विषय पहचानिए इसलिए नवीनता किसी एक व्यक्ति या वस्तु को नहीं, विश्व की माया को प्राप्त हो रही है। बदलती काया उसके हर क्षण नया रूप लेने का संकेत है।

चरण 3: निष्कर्ष क्षण-प्रतिक्षण विश्व की माया को नवीनता प्राप्त हो रही है; वह निरंतर अपना रूप बदल रही है।

त्वरित सुझाव: काया बदलने वाली पंक्ति के कर्ता को पहचानकर अगली पंक्ति के नवीना शब्द से जोड़िए।

2(ग). 'वायु के चरण भी काँप रहे हैं' से कवि का क्या आशय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि प्राकृतिक दृश्य के माध्यम से वातावरण के भय और अस्थिरता को व्यक्त करता है।
- वायु के काँपते चरणों में मानवीय क्रिया का आरोप है; आशय शाब्दिक पैरों से नहीं है।

चरण 1: बिंब समझिए वायु के चरण काँपने का चित्र ऐसा अनुभव देता है मानो हवा भी डरी हुई हो और उसका चलना सहज न रह गया हो। यह कवि की कल्पना में भय का सजीव रूप है।

चरण 2: प्रसंग से आशय निकालिए आसपास विनाशशील परिवर्तन और घायल सर्पिणियों जैसी विक्षुब्ध लहरियों का वर्णन है। इस संदर्भ में काँपती वायु संसार में व्याप्त भय, व्याकुलता तथा असुरक्षा को और तीव्र करती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का आशय है कि वातावरण इतना भयपूर्ण और अस्थिर है कि मानो वायु भी भय से काँप रही हो।

त्वरित सुझाव: काँपने को भय का संकेत मानकर आसपास के विनाशशील और विक्षुब्ध वातावरण से उसका संबंध समझाइए।

2(घ). कवि कैसा स्थान खोज रहा है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि की खोज का उद्देश्य काव्यांश की अंतिम पंक्तियों में सीधे व्यक्त हुआ है।
- उत्तर में उस स्थान के गुण और वहाँ संभव क्रिया, दोनों का उल्लेख आवश्यक है।

चरण 1: इच्छित स्थान पहचानिए कवि पूछता है कि वह ऐसी जगह कहाँ से लाए जहाँ संबोधित व्यक्ति निर्भय और हर्षित होकर खेल सके। इससे भय से मुक्त वातावरण की इच्छा प्रकट होती है।

चरण 2: खोज का कारण जोड़िए संसार का विनाशशील और व्याकुल रूप सुरक्षित स्थान की आवश्यकता को सामने लाता है। कवि ऐसी शांत जगह चाहता है जहाँ भय या असुरक्षा खेल के आनंद में बाधा न बने।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ऐसा सुरक्षित और शांत स्थान खोज रहा है जहाँ संबोधित व्यक्ति निर्भय तथा हर्षित होकर खेल सके।

त्वरित सुझाव: अंतिम पंक्तियों के निर्भय, हर्षित और खेल सको शब्दों से इच्छित स्थान के गुण लिखिए।

3(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए : भारतीय संस्कृति [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद में एक केंद्रीय विचार का क्रमबद्ध विस्तार किया जाता है। विषय की भूमिका, उसके प्रमुख पक्ष और सारपूर्ण अंत एक ही प्रवाह में जुड़े रहने चाहिए।
- भारतीय संस्कृति पर लिखते समय विविधता में एकता, सहिष्णुता, मानवीय मूल्यों और परंपरा के विवेकपूर्ण विकास को उदाहरणों से स्पष्ट करना उपयोगी है।

चरण 1: विषय और प्रस्तुति का आधार यह विषय भारत की सांस्कृतिक पहचान का संतुलित परिचय चाहता है। आरंभ में संस्कृति का अर्थ केवल पहनावा या भोजन तक सीमित न रखकर जीवन-मूल्यों और व्यवहार से जोड़ें। उसके बाद भाषाओं, पर्वों, कलाओं और आस्थाओं की विविधता का उल्लेख करें। अनुच्छेद का स्वर सकारात्मक रहे, किंतु किसी संस्कृति की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए दूसरी संस्कृति को छोटा न दिखाएँ।

चरण 2: विचारों का क्रम और सामग्री पहले विविधता में एकता का सूत्र रखें; फिर अतिथि-सत्कार, बड़ों का आदर, करुणा और सहअस्तित्व जैसे मूल्यों को सामने लाएँ। संगीत, साहित्य, योग तथा विभिन्न पर्वों से विषय को ठोस आधार दें। अंत में समझाएँ कि संस्कृति को जीवित रखने के लिए अंधविश्वास त्यागना और समानता तथा वैज्ञानिक दृष्टि अपनाना भी आवश्यक है। इस प्रकार विवरण और विचार में संतुलन बना रहेगा।

चरण 3: पूर्ण आदर्श अनुच्छेद भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति अनेक भाषाओं, धर्मों, परंपराओं और कलाओं का सुंदर संगम है। इसकी प्रमुख विशेषता विविधता में एकता है। यहाँ अलग-अलग वेशभूषाएँ और भोजन-पद्धतियाँ होते हुए भी लोगों को जोड़ने वाली मानवीय संवेदना समान है। अतिथि-सत्कार, बड़ों का आदर, करुणा, सहिष्णुता और प्रकृति के प्रति सम्मान इसके महत्त्वपूर्ण मूल्य हैं। हमारे पर्व सामूहिक आनंद और पारस्परिक सहयोग का अवसर देते हैं। संगीत, नृत्य, साहित्य और लोककलाएँ सांस्कृतिक विरासत को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाती हैं। योग और आत्मचिंतन की परंपरा मनुष्य के आंतरिक विकास पर बल देती है। किंतु संस्कृति का संरक्षण केवल अतीत की प्रशंसा करना नहीं है। हमें उपयोगी परंपराओं को अपनाते हुए भेदभाव और अंधविश्वास का त्याग भी करना चाहिए। समानता, वैज्ञानिक दृष्टि और सभी समुदायों के प्रति सम्मान से भारतीय संस्कृति अधिक समृद्ध बनेगी। उसकी वास्तविक पहचान मनुष्यता और मिल-जुलकर रहने की भावना में निहित है।

चरण 4: निष्कर्ष इस अनुच्छेद में भारतीय संस्कृति की विविधता, एकता और मानवीय मूल्यों को समकालीन उत्तरदायित्व से जोड़कर विषय का समग्र विकास किया गया है।

त्वरित सुझाव: संस्कृति पर अनुच्छेद लिखते समय केवल पर्वों की सूची न दें; प्रत्येक उदाहरण को एकता, सहिष्णुता या मानवीय मूल्य से जोड़ें।

3(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए : मौन का आनंद [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारप्रधान अनुच्छेद में विषय का अर्थ स्पष्ट करके उसके अनुभव और उपयोगिता का क्रमबद्ध विस्तार किया जाता है। प्रत्येक वाक्य केंद्रीय भाव से जुड़ा रहना चाहिए।
- मौन का आनंद मानसिक शांति, आत्मचिंतन और सजग श्रवण से संबंधित है। इसे अन्याय के सामने चुप रहने या समाज से कट जाने का समर्थन नहीं बनाना चाहिए।

चरण 1: विषय का आशय और रूपरेखा मौन को केवल बोलना बंद कर देने के अर्थ में न लें। यहाँ उसका आशय बाहरी शोर और मन की बेचैनी से कुछ समय मुक्त होकर स्वयं को समझने से है। भूमिका में आज के शोरपूर्ण जीवन का संकेत दें। मध्य में प्रकृति का अनुभव, दूसरों को सुनना और आत्मचिंतन रखें। अंतिम वाक्यों में सार्थक मौन और आवश्यक संवाद का संतुलन स्पष्ट करें।

चरण 2: अनुभव और विचार का संयोजन सुबह की शांति, पक्षियों का स्वर और पत्तों की सरसराहट जैसे परिचित अनुभव विषय को

जीवंत बना सकते हैं। उनसे यह विचार विकसित करें कि शांत मन अपनी भूलों और इच्छाओं को बेहतर पहचानता है। मौन क्रोध में तुरंत प्रतिक्रिया देने से भी रोक सकता है। किंतु अन्याय या सहायता की आवश्यकता होने पर बोलना जरूरी है; इस सीमा को बताने से अनुच्छेद एकांगी नहीं रहता।

चरण 3: पूर्ण आदर्श अनुच्छेद मौन का आनंद

लगातार शोर, बातचीत और सूचनाओं से घिरे जीवन में मौन एक सुखद विराम है। जब हम कुछ समय शांत बैठते हैं, तब अपने विचारों और भावनाओं को स्पष्ट रूप से पहचान पाते हैं। सुबह की नीरवता में पक्षियों की चहचहाहट और पत्तों की सरसराहट भी विशेष आनंद देती है। मौन हमें दूसरों की बात ध्यान से सुनना सिखाता है। इससे संबंधों में समझ बढ़ती है और अनावश्यक विवाद कम हो सकते हैं। क्रोध के क्षण में थोड़ा मौन हमारी प्रतिक्रिया को संयमित बनाता है। आत्मचिंतन के लिए मिला यह अवकाश हमें अपनी भूलें पहचानने और सही निर्णय लेने में सहायता देता है। किंतु मौन का अर्थ अन्याय सहना या जरूरी बात दबाना नहीं है। उचित अवसर पर स्पष्ट संवाद भी आवश्यक है। प्रतिदिन कुछ समय शांत वातावरण में बैठना मन को सहज बना सकता है। इस प्रकार विवेकपूर्ण मौन जीवन से पलायन नहीं, बल्कि उसे अधिक सजगता और संतुलन के साथ जीने की शक्ति है।

चरण 4: निष्कर्ष आदर्श अनुच्छेद मौन से मिलने वाली शांति और आत्मबोध को स्पष्ट करता है तथा आवश्यक संवाद की भूमिका स्वीकार करके विषय को संतुलित रूप देता है।

त्वरित सुझाव: मौन पर लिखते समय शांति का एक ठोस अनुभव जोड़ें और अंत में स्पष्ट करें कि अन्याय के विरुद्ध बोलना भी आवश्यक है।

3(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए : खेल और स्वास्थ्य [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद में एक केंद्रीय विचार को क्रमबद्ध ढंग से विकसित किया जाता है। यहाँ खेलों और शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य के संबंध को उदाहरणों के साथ स्पष्ट करना है।
- प्रभावी अनुच्छेद में विषयानुकूल शीर्षक, आरंभिक कथन, परस्पर जुड़े तर्क और सार्थक अंतिम वाक्य होते हैं। भाषा सरल और विचार संतुलित होने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय-विस्तार निर्धारित करना शीर्षक 'खेल और स्वास्थ्य' रहेगा। आरंभ में स्वस्थ जीवन में खेलों की आवश्यकता बताई जाएगी। उसके बाद शारीरिक लाभ, मानसिक प्रसन्नता और सामाजिक गुणों का विकास समझाया जाएगा। अंत में नियमित तथा सुरक्षित खेल-अभ्यास का आग्रह किया जाएगा।

चरण 2: विचारों का क्रम और भाषा चुनना मैदानी खेलों के उदाहरण देकर शरीर की सक्रियता स्पष्ट करें। फिर तनाव कम होने, एकाग्रता बढ़ने और अनुशासन सीखने की बात जोड़ें। खेलों को संतुलित भोजन, पर्याप्त विश्राम और सुरक्षा से जोड़ना आवश्यक है; केवल खेल लेने से हर बीमारी दूर होने जैसा अतिरंजित दावा नहीं करना चाहिए।

चरण 3: पूर्ण आदर्श अनुच्छेद **खेल और स्वास्थ्य**

स्वास्थ्य जीवन की सबसे मूल्यवान संपत्ति है और खेल उसकी रक्षा का सहज माध्यम हैं। नियमित खेलकूद से शरीर सक्रिय रहता है, मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं और सहनशक्ति बढ़ती है। दौड़ना, तैरना, कबड्डी या फुटबॉल खेलना हमें आलस्य से दूर रखता है। खेल केवल शरीर को ही लाभ नहीं पहुँचाते, बल्कि मन को भी प्रसन्न रखते हैं। पढ़ाई और काम के दबाव के बीच खेलने से तनाव घटता है तथा एकाग्रता बढ़ती है। सामूहिक खेल सहयोग, अनुशासन और नियमों के पालन की सीख देते हैं। हार को स्वीकार करना तथा जीत पर विनम्र रहना भी हम खेल के मैदान में सीखते हैं। आज मोबाइल और कंप्यूटर के बढ़ते उपयोग ने बच्चों की शारीरिक सक्रियता कम कर दी है। इसलिए विद्यालयों और परिवारों को प्रतिदिन खेलने के लिए समय और सुरक्षित स्थान उपलब्ध कराना चाहिए। अपनी आयु और क्षमता के अनुसार खेल चुनना, संतुलित भोजन लेना और पर्याप्त विश्राम करना भी आवश्यक है। खेलों को दिनचर्या का हिस्सा बनाकर हम स्वस्थ शरीर, प्रसन्न मन और संतुलित व्यक्तित्व प्राप्त कर सकते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष खेल शारीरिक सक्रियता, मानसिक प्रसन्नता और अनुशासित जीवन के आधार हैं। प्रस्तुत अनुच्छेद इन्हीं पहलुओं को एक केंद्रीय विचार से जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: लाभों की सूची भर न लिखें; शरीर, मन और व्यवहार के लाभों को जोड़कर अंत में नियमित खेलकूद का व्यावहारिक सुझाव दें।

3(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए : विज्ञापनों का आकर्षण [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद में विज्ञापनों के आकर्षण के कारण, उनके उपयोग और उपभोक्ता पर पड़ने वाले प्रभावों को एक केंद्रीय विचार के अंतर्गत विकसित करना है।
- विषय के पक्ष और सीमा दोनों को स्पष्ट करते हुए अंतिम वाक्य में विवेकपूर्ण खरीदारी का संदेश देना संतुलित लेखन की विशेषता है।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना बनाना शीर्षक 'विज्ञापनों का आकर्षण' लिखें। आरंभ में दैनिक जीवन में विज्ञापनों की उपस्थिति बताएँ। फिर रंग, संगीत, प्रभावशाली शब्द, प्रसिद्ध व्यक्तियों और छूट जैसे आकर्षणों का उल्लेख करें। उपयोगी जानकारी तथा भ्रामक दावों के अंतर को समझाते हुए अनुच्छेद समाप्त करें।

चरण 2: विचारों को तार्किक ढंग से जोड़ना पहले विज्ञापन के आकर्षक रूप का वर्णन करें, फिर बताएँ कि वह इच्छाओं और खरीद के निर्णयों को कैसे प्रभावित करता है। सभी विज्ञापनों को झूठा कहना उचित नहीं है। जानकारी के लाभ को स्वीकार करते हुए अनावश्यक खरीद और दिखावे से सावधान रहने का संदेश दें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श अनुच्छेद **विज्ञापनों का आकर्षण**

आज विज्ञापन हमारे जीवन का परिचित हिस्सा बन गए हैं। समाचारपत्र खोलते ही, टेलीविजन देखते समय या मोबाइल चलाते हुए वे हमारा ध्यान खींचते हैं। सुंदर चित्र, चमकीले रंग, मधुर संगीत और छोटे प्रभावशाली वाक्य उनके आकर्षण को बढ़ाते हैं। जब कोई प्रसिद्ध खिलाड़ी या अभिनेता किसी वस्तु की प्रशंसा करता है, तो उसे खरीदने की इच्छा और प्रबल हो जाती है। छूट, उपहार और सीमित समय के प्रस्ताव भी उपभोक्ताओं को लुभाते हैं। विज्ञापन नई वस्तुओं, सेवाओं और सुविधाओं की जानकारी देकर उपयोगी भूमिका निभाते हैं। किंतु उनका उद्देश्य बिक्री बढ़ाना भी होता है। इसलिए कभी-कभी वस्तु के गुण बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किए जाते हैं और साधारण आवश्यकताओं को प्रतिष्ठा से जोड़ दिया जाता है। बच्चे और युवा ऐसे संदेशों से विशेष रूप से प्रभावित हो सकते हैं। आकर्षण में आकर अनावश्यक वस्तुएँ खरीदना धन की बर्बादी है। हमें विज्ञापन देखकर तुरंत निर्णय लेने के बजाय वस्तु की गुणवत्ता, मूल्य और वास्तविक आवश्यकता की जाँच करनी चाहिए। विज्ञापनों की चमक तभी लाभदायक है, जब उपभोक्ता उसके बीच अपना विवेक बनाए रखे।

चरण 4: निष्कर्ष विज्ञापनों का आकर्षक रूप सूचना भी देता है और खरीदने की इच्छा भी जगाता है। इसलिए उनकी उपयोगिता स्वीकार करते हुए उपभोक्ता को सोच-समझकर निर्णय लेना चाहिए।

त्वरित सुझाव: विज्ञापन के आकर्षण का उदाहरण देने के बाद उसका प्रभाव समझाएँ और अंतिम वाक्य में आवश्यकता तथा गुणवत्ता जाँचने का सुझाव जोड़ें।

4. नगर में व्याप्त गंदगी पर चिंता व्यक्त करते हुए नगर आयुक्त को शिकायती पत्र लिखिए कि देश में चल रहे स्वच्छ भारत अभियान के प्रति उनकी यह लापरवाही क्यों चिंताजनक है । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिकायती पत्र में समस्या का स्थान, उसका जनजीवन पर प्रभाव और संबंधित अधिकारी से अपेक्षित कार्रवाई स्पष्ट लिखी जाती है।
- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य तथा हस्ताक्षर क्रम से आते हैं। भाषा विनम्र, तथ्यपरक और संक्षिप्त रहती है।

चरण 1: प्रारूप और विषय की योजना पत्र नगर आयुक्त को संबोधित होगा। पहले नगर में जमा कूड़े और अवरुद्ध नालियों की समस्या बताई जाएगी। फिर स्वास्थ्य पर उसके दुष्प्रभाव और स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य से उसके विरोध को स्पष्ट करके नियमित सफाई, कूड़ा उठाने और निगरानी की माँग की जाएगी। किसी अधिकारी पर व्यक्तिगत आरोप लगाने के स्थान पर विभागीय उत्तरदायित्व पर ध्यान दिया जाएगा।

चरण 2: पूर्ण नमूना पत्र 24, शांति नगर
मेरठ, उत्तर प्रदेश
दिनांक : 15 जुलाई, 2019
सेवा में,
नगर आयुक्त महोदय,
नगर निगम, मेरठ।
विषय : नगर में व्याप्त गंदगी और सफाई व्यवस्था की उपेक्षा के संबंध में।
महोदय,
मैं आपके संज्ञान में नगर की अत्यंत खराब सफाई व्यवस्था लाना चाहता हूँ। शांति नगर सहित अनेक मोहल्लों में कई दिनों से कूड़ा नहीं उठाया गया है। सड़कों के किनारे कचरे के ढेर लगे हैं और नालियाँ अवरुद्ध हैं। वर्षा होने पर गंदा पानी गलियों में भर जाता है। दुर्गंध, मक्खियों और मच्छरों के कारण निवासियों को भारी परेशानी हो रही है। बच्चों तथा बुजुर्गों के स्वास्थ्य पर विशेष खतरा है।

देश में चल रहा स्वच्छ भारत अभियान स्वच्छता को सार्वजनिक उत्तरदायित्व बनाने का प्रयास है। ऐसे में नगर निगम की लापरवाही चिंताजनक है। इससे न केवल अभियान का उद्देश्य प्रभावित होता है, बल्कि नागरिकों का विश्वास और सफाई के प्रति उनका उत्साह भी घटता है। केवल जागरूकता के नारे पर्याप्त नहीं हैं; नियमित सफाई की व्यवस्था भी आवश्यक है।

अतः निवेदन है कि तत्काल कूड़ा उठवाया जाए, नालियों की सफाई कराई जाए तथा प्रतिदिन घरों से कचरा एकत्र करने की व्यवस्था सुनिश्चित हो। गीले और सूखे कचरे के लिए अलग पात्र लगाए जाएँ। सफाई कर्मचारियों की उपस्थिति और कार्य की नियमित निगरानी हो तथा शिकायतों के निस्तारण की समय-सीमा तय की जाए। नागरिक भी कचरा निर्धारित स्थान पर डालकर सहयोग करेंगे।

आशा है कि आप शीघ्र प्रभावी कार्रवाई करेंगे।
धन्यवाद।
भवदीय,
अमन कुमार
स्थानीय निवासी

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में गंदगी की समस्या, स्वच्छ भारत अभियान के प्रति प्रशासनिक उत्तरदायित्व और सफाई सुधारने के ठोस उपाय विनम्र भाषा में प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: विषय-पंक्ति में समस्या स्पष्ट लिखें और मुख्य भाग में समस्या, प्रभाव तथा अपेक्षित कार्रवाई का क्रम रखें।

अथवा

4. वर्तमान समय में बढ़ती अपराध की घटनाओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को अपने सुझाव लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को पत्र लिखकर सार्वजनिक समस्या पर पाठकों और संबंधित प्रशासन का ध्यान आकर्षित किया जाता है।
- अपराध की समस्या पर पत्र में चिंता के साथ व्यावहारिक सुझाव और नागरिक सहयोग का उल्लेख करना चाहिए। अप्रमाणित आँकड़ों तथा सनसनीखेज आरोपों से बचना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप तथा सामग्री की योजना प्रेषक के पते और दिनांक के बाद दैनिक समाचार-पत्र के संपादक का पद तथा पता आएगा। विषय में बढ़ते अपराधों की रोकथाम लिखा जाएगा। मुख्य भाग में असुरक्षा की स्थिति, पुलिस और प्रशासन से अपेक्षित उपाय तथा नागरिकों की जिम्मेदारी रखी जाएगी। अंत में जनहित में पत्र प्रकाशित करने का अनुरोध और लेखक का नाम होगा।

चरण 2: पूर्ण नमूना पत्र 18, विकास नगर
नई दिल्ली

दिनांक : 15 जुलाई, 2019
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जागरण, नई दिल्ली।
विषय : बढ़ती आपराधिक घटनाओं की रोकथाम के लिए सुझाव।
महोदय,
आपके लोकप्रिय दैनिक के माध्यम से मैं प्रशासन तथा नागरिकों का ध्यान बढ़ती आपराधिक घटनाओं की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। चोरी, लूट, छेड़छाड़ और धोखाधड़ी की घटनाओं से सामान्य नागरिक असुरक्षित अनुभव करते हैं। विशेषकर सुनसान रास्तों और अँधेरी गलियों से आने-जाने में महिलाओं तथा बुजुर्गों को भय रहता है। यह स्थिति सामाजिक विश्वास और सामान्य जनजीवन को प्रभावित करती है।

अपराधों की रोकथाम के लिए संवेदनशील स्थानों पर नियमित पुलिस गश्त बढ़ाई जाए। खराब पड़ी सड़क-बत्तियाँ ठीक हों और आवश्यक स्थानों पर निगरानी कैमरे लगाए जाएँ। शिकायत दर्ज कराने की प्रक्रिया सरल तथा संवेदनशील हो। पुलिस की त्वरित कार्रवाई और निष्पक्ष जाँच से अपराधियों में कानून का भय उत्पन्न होगा तथा पीड़ितों का विश्वास बढ़ेगा। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा और युवाओं के लिए रोजगारपरक प्रशिक्षण भी आवश्यक है।

नागरिकों को संदिग्ध गतिविधियों की सूचना पुलिस को देनी चाहिए और अपराध देखकर चुप रहने के बजाय सुरक्षित ढंग से सहायता करनी चाहिए। मोहल्ला समितियाँ पुलिस के साथ संवाद स्थापित करें। साथ ही, अफवाहें फैलाने और बिना प्रमाण किसी व्यक्ति को दोषी ठहराने से बचें। समाचार-पत्र भी सुरक्षा संबंधी जानकारी देकर जनजागरूकता बढ़ा सकते हैं।

कृपया इस पत्र को प्रकाशित करके जनहित के इस विषय पर जिम्मेदार अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करें।
धन्यवाद।
भवदीय,
अमन कुमार
जागरूक नागरिक

चरण 3: निष्कर्ष संपादक को लिखे पत्र में बढ़ते अपराधों पर चिंता के साथ पुलिस की सक्रियता, प्रकाश और निगरानी की व्यवस्था तथा सजग नागरिक सहयोग के सुझाव दिए गए हैं।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र में समस्या बताने के बाद ठोस सुझाव अवश्य दें और अंत में जनहित में प्रकाशन का अनुरोध करें।

5(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : एंकर बाइट किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचार में एंकर की सूचना के साथ घटना से जुड़े व्यक्ति का प्रत्यक्ष कथन समाचार को प्रामाणिक बनाता है।
- बाइट का आशय किसी संबंधित व्यक्ति के संक्षिप्त कथन से है।

चरण 1: समाचार प्रस्तुति को पहचानना एंकर पहले घटना की सूचना देता है। उसके साथ घटना से संबंधित व्यक्ति अथवा प्रत्यक्षदर्शी का कथन दिखाया और सुनाया जाता है। इस प्रकार दर्शक समाचार के साथ उस व्यक्ति की बात भी जान पाते हैं।

चरण 2: बाइट का उद्देश्य समझना संबंधित व्यक्ति का कथन घटना की पुष्टि करता है और समाचार की विश्वसनीयता बढ़ाता है। केवल एंकर द्वारा समाचार पढ़ देना बाइट नहीं है; इसमें प्रत्यक्षदर्शी अथवा संबंधित व्यक्ति की बात शामिल होना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष एंकर द्वारा प्रस्तुत समाचार के साथ उसकी पुष्टि के लिए किसी प्रत्यक्षदर्शी या संबंधित व्यक्ति का कथन दिखाना और सुनाना एंकर-बाइट कहलाता है।

त्वरित सुझाव: एंकर-बाइट की परिभाषा में संबंधित व्यक्ति का कथन और समाचार की पुष्टि, दोनों बातें अवश्य लिखें।

5(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : भारत में रेडियो का प्रारम्भ कब हुआ ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न जनसंचार माध्यमों के इतिहास में भारत के आरंभिक रेडियो प्रसारण का समय पूछता है।
- आरंभिक प्रयोगात्मक प्रसारण और बाद की संगठित प्रसारण सेवा के समय में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: आरंभिक प्रसारण को पहचानना पाठ्यपुस्तक के अनुसार भारत में 1921 में मुंबई से रेडियो प्रसारण का प्रारंभ हुआ। टाइम्स ऑफ इंडिया ने डाक-तार विभाग के सहयोग से पहला संगीत कार्यक्रम प्रसारित किया था। प्रश्न में प्रारंभ पूछा गया है, इसलिए इस आरंभिक प्रसारण का वर्ष लिखना उचित है।

चरण 2: बाद के विकास से अंतर करना 1927 में इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कंपनी की संगठित प्रसारण सेवा आरंभ हुई और 1936 में ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना हुई। ये रेडियो के बाद के विकास की घटनाएँ हैं। इन्हें पाठ्यपुस्तक में उल्लिखित 1921 के प्रारंभिक संगीत प्रसारण के साथ नहीं मिलाना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष भारत में रेडियो प्रसारण का प्रारंभ 1921 में मुंबई से हुआ। टाइम्स ऑफ इंडिया ने डाक-तार विभाग के सहयोग से पहला संगीत कार्यक्रम प्रसारित किया था।

त्वरित सुझाव: प्रारंभ के प्रश्न में पाठ्यपुस्तक का 1921 वाला संगीत प्रसारण याद रखें; उसे 1927 की संगठित सेवा से अलग रखें।

5(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : जनसंचार के कोई दो कार्य लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनसंचार व्यापक जनसमूह तक सूचना, विचार और संदेश पहुँचाने की प्रक्रिया है।
- इसके प्रमुख कार्यों में सूचना देना, शिक्षा देना और मनोरंजन करना शामिल हैं।

चरण 1: सूचना संबंधी कार्य जनसंचार समाचारों और अन्य माध्यमों से देश-विदेश की घटनाओं की जानकारी देता है। इससे नागरिक अपने आसपास की परिस्थितियों और सार्वजनिक विषयों से परिचित होते हैं।

चरण 2: शिक्षा संबंधी कार्य जनसंचार ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों, लेखों तथा जनहित के संदेशों से जनता को शिक्षित करता है। स्वास्थ्य, स्वच्छता और नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाना इसी कार्य के उदाहरण हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जनसंचार के दो कार्य हैं—जनता को सूचना देना और उसे शिक्षित करना।

त्वरित सुझाव: दो अलग कार्य स्पष्ट लिखें; सूचना देने और शिक्षा देने को उनके उद्देश्य से अलग पहचानें।

5(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : स्वतंत्र पत्रकार से क्या आशय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों का वर्गीकरण उनके कार्य और समाचार-संस्था के साथ संबंध के आधार पर होता है।
- स्वतंत्र पत्रकार अलग-अलग समाचार-संस्थाओं को अपनी रचनाएँ उपलब्ध करा सकता है।

चरण 1: कार्य-संबंध पहचानिए स्वतंत्र पत्रकार किसी एक समाचार-संस्था का नियमित वेतनभोगी कर्मचारी नहीं होता। वह अपनी रुचि, विशेषज्ञता और उपलब्ध अवसरों के अनुसार स्वतंत्र रूप से पत्रकारिता करता है।

चरण 2: लेखन और पारिश्रमिक समझिए वह विभिन्न समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं या अन्य माध्यमों के लिए समाचार, लेख अथवा रिपोर्ट तैयार करता है। सामान्यतः उसे स्वीकृत या प्रकाशित सामग्री के आधार पर पारिश्रमिक मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष किसी एक संस्था की नियमित नौकरी किए बिना विभिन्न समाचार-माध्यमों के लिए पारिश्रमिक पर लेखन करने वाला व्यक्ति स्वतंत्र पत्रकार कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में नियमित नौकरी का अभाव और विभिन्न संस्थाओं के लिए लेखन—दोनों बातें जोड़ें।

5(ङ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : खोजी पत्रकारिता क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खोजी पत्रकारिता में लोकहित के छिपे तथ्यों का प्रमाण सहित पता लगाया जाता है।
- इसका आधार गहन जाँच, विश्वसनीय स्रोत और तथ्यों की पुष्टि है।

चरण 1: उद्देश्य समझिए खोजी पत्रकारिता उन तथ्यों को सामने लाती है जिन्हें संबंधित व्यक्ति या संस्था जनता से छिपाना चाहते हैं। भ्रष्टाचार, अनियमितता अथवा सत्ता के दुरुपयोग का पर्दाफाश इसके विषय हो सकते हैं।

चरण 2: प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए पत्रकार दस्तावेजों, साक्षात्कारों और अन्य विश्वसनीय स्रोतों की सहायता से गहराई में जाँच करता है। वह प्राप्त सूचनाओं की पुष्टि करके प्रमाणों के साथ रिपोर्ट प्रस्तुत करता है; अपुष्ट आरोप लगाना खोजी पत्रकारिता नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष लोकहित में छिपाए गए तथ्यों की गहन जाँच कर उन्हें प्रमाण सहित उजागर करना खोजी पत्रकारिता कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में गहन जाँच, छिपे तथ्य और प्रमाण सहित खुलासा—इन तीन बातों को जोड़ें।

6. 'आतंकवाद' विषय पर एक आलेख लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी विषय पर क्रमबद्ध, विचारपूर्ण और तथ्यपरक अभिव्यक्ति है।
- शीर्षक और लेखक के नाम के बाद भूमिका, विवेचन तथा समाधान प्रस्तुत किए जाते हैं।

चरण 1: रूपरेखा बनाइए आतंकवाद का आशय स्पष्ट करने के बाद उसके सामाजिक प्रभावों का विवेचन करें। फिर सुरक्षा, शिक्षा, सामाजिक सद्भाव और अंतरराष्ट्रीय सहयोग जैसे उपाय सुझाएँ। किसी धर्म या समुदाय को आतंकवाद से जोड़ने से बचें।

चरण 2: विचारों का क्रम निर्धारित कीजिए प्रारंभ में भय और हिंसा के सहारे उद्देश्य प्राप्त करने की प्रवृत्ति का उल्लेख करें। मध्य भाग में निर्दोष नागरिकों की हानि और विकास पर प्रभाव लिखें। अंत में कानून के प्रभावी पालन तथा नागरिक एकता का महत्त्व बताएँ।

चरण 3: पूर्ण आदर्श आलेख **आतंकवाद: मानवता के लिए चुनौती**

लेखक: एक विद्यार्थी

आतंकवाद हिंसा और भय के माध्यम से अपने उद्देश्य मनवाने की प्रवृत्ति है। इसका सबसे अधिक कष्ट निर्दोष लोगों को सहना पड़ता है। किसी सार्वजनिक स्थान पर हुआ हमला अनेक परिवारों का भविष्य छीन लेता है और समाज में असुरक्षा फैलाता है।

आतंकवाद केवल जान-माल की क्षति नहीं करता; वह आपसी विश्वास को भी कमजोर करता है। व्यापार, पर्यटन और शिक्षा प्रभावित होते हैं। अफवाहें तथा घृणा फैलाने वाले संदेश इस संकट को और बढ़ाते हैं। आतंकवादी हिंसा को किसी धर्म या समुदाय का प्रतिनिधि मानना अनुचित है।

इस समस्या से निपटने के लिए सुरक्षा-व्यवस्था मजबूत करने के साथ निष्पक्ष जाँच और कानून का प्रभावी पालन आवश्यक है। युवाओं

को शिक्षा, रोजगार और रचनात्मक अवसर मिलने चाहिए। देशों के बीच सूचनाओं का आदान-प्रदान तथा सहयोग भी जरूरी है।

नागरिकों को संदिग्ध गतिविधियों की सूचना जिम्मेदार अधिकारियों को देनी चाहिए और अपुष्ट संदेशों को आगे नहीं बढ़ाना चाहिए। शांति, न्याय और सामाजिक एकता की रक्षा करके ही आतंकवाद का प्रभावी प्रतिरोध किया जा सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष संगठित सुरक्षा-प्रयासों, नागरिक जागरूकता और सामाजिक सद्भाव से आतंकवाद का मुकाबला किया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: आलेख में समस्या के साथ उसके प्रभाव और व्यावहारिक समाधान भी दें; केवल नारे न लिखें।

अथवा

6. अपने द्वारा हाल ही में पढ़ी गई किसी पुस्तक की समीक्षा लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुस्तक-समीक्षा में पुस्तक और लेखक का परिचय, विषय-वस्तु तथा गुण-दोषों का मूल्यांकन होता है।
- समीक्षा केवल कथासार नहीं है; उसमें उदाहरणों पर आधारित पाठकीय प्रतिक्रिया भी आवश्यक है।

चरण 1: पुस्तक और समीक्षा की योजना चुनिए प्रेमचंद के उपन्यास 'निर्मला' की समीक्षा में लेखक-परिचय, मुख्य समस्या, पात्रों, भाषा और प्रभाव का उल्लेख किया जा सकता है। समीक्षा का केंद्र दहेज और अनमेल विवाह के दुष्परिणाम रहेंगे।

चरण 2: मूल्यांकन के आधार तय कीजिए कथानक का संक्षिप्त परिचय देकर निर्मला और तोताराम के जीवन में अविश्वास से उत्पन्न त्रासदी समझाएँ। संवाद, मनोवैज्ञानिक चित्रण और सामाजिक संदेश का मूल्यांकन करें। साथ ही कथा की दुखप्रधानता पर संतुलित टिप्पणी दें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श समीक्षा **'निर्मला': सामाजिक अन्याय की मार्मिक कथा**

समीक्षक: एक विद्यार्थी

हाल ही में मैंने प्रेमचंद का उपन्यास 'निर्मला' पढ़ा। यह उपन्यास दहेज-प्रथा, अनमेल विवाह और पारिवारिक अविश्वास की समस्याओं को संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करता है।

दहेज की समस्या के कारण निर्मला का विवाह अपने से अधिक आयु के तोताराम से हो जाता है। नए परिवार में वह स्नेह और कर्तव्य से अपना स्थान बनाना चाहती है, किंतु तोताराम का संदेह घर के सहज संबंधों को विषाक्त कर देता है। मंसाराम के प्रति उनका अविश्वास परिवार को गहरी त्रासदी की ओर ले जाता है।

उपन्यास की विशेषता पात्रों के मनोभावों का प्रभावी चित्रण है। निर्मला की विवशता पाठक को स्त्री की सामाजिक स्थिति पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है। भाषा सहज है और संवाद पात्रों की मानसिकता खोलते हैं। घटनाएँ सामाजिक कुरीतियों के विनाशकारी प्रभाव को स्पष्ट करती हैं।

कथा में दुखद घटनाओं की अधिकता कभी-कभी वातावरण को अत्यंत बोझिल बना देती है। फिर भी यह दुख निरर्थक नहीं लगता, क्योंकि इसके पीछे समाज की कठोर व्यवस्था दिखाई देती है। मेरे विचार में 'निर्मला' एक विचारोत्तेजक पुस्तक है, जो विवाह में समानता, विश्वास और मानवीय गरिमा का महत्त्व समझाती है।

चरण 4: निष्कर्ष 'निर्मला' दहेज, अनमेल विवाह और संदेह के दुष्परिणामों को उभारने वाला प्रभावशाली सामाजिक उपन्यास है।

त्वरित सुझाव: समीक्षा में कथासार के बाद भाषा, पात्र और प्रभाव पर अपनी प्रमाणित टिप्पणी अवश्य जोड़ें।

7. 'स्वामी विवेकानंद' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में तथ्य, मानवीय रुचि और रोचक प्रस्तुति का समन्वय होता है।
- व्यक्तित्वपरक फ़ीचर में जीवन की प्रमुख घटनाओं के साथ विचारों की आज की प्रासंगिकता दिखाई जाती है।

चरण 1: प्रस्तुति की रूपरेखा बनाइए स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व पर आकर्षक शीर्षक दें। शुरुआत उनके प्रभावशाली सार्वजनिक व्यक्तित्व से करें। फिर उनके प्रारंभिक जीवन, गुरु रामकृष्ण परमहंस, शिकागो संबोधन और सेवा के संदेश को जोड़ें।

चरण 2: तथ्य और मानवीय पक्ष जोड़िए उनका जन्म 12 जनवरी 1863 को हुआ और बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। 1893 में शिकागो की विश्व धर्म संसद में उनके संबोधन ने व्यापक ध्यान खींचा। युवाओं के आत्मविश्वास और मानव-सेवा पर बल फ़ीचर का केंद्रीय भाव हो सकता है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श फ़ीचर **युवा चेतना की ज्योति: स्वामी विवेकानंद**

लेखक: एक विद्यार्थी

गेरुए वस्त्रों में खड़ा एक भारतीय संन्यासी और सामने विश्व के अनेक देशों से आए श्रोता! 1893 की शिकागो विश्व धर्म संसद में स्वामी विवेकानंद ने भारतीय आध्यात्मिक चिंतन का ऐसा परिचय दिया, जिसने लोगों का ध्यान खींच लिया। उनके व्यक्तित्व में विद्वत्ता के साथ आत्मविश्वास और आत्मीयता थी।

12 जनवरी 1863 को जन्मे नरेंद्रनाथ दत्त बचपन से जिज्ञासु थे। वे जीवन और ईश्वर से जुड़े प्रश्नों के उत्तर खोजते थे। रामकृष्ण परमहंस के संपर्क ने उनकी आध्यात्मिक यात्रा को दिशा दी। आगे चलकर वे स्वामी विवेकानंद के रूप में प्रसिद्ध हुए।

उनके लिए अध्यात्म केवल व्यक्तिगत मुक्ति का मार्ग नहीं था। भूखे, गरीब और पीड़ित मनुष्य की सेवा भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण थी। उन्होंने युवाओं को अपनी शक्ति पहचानने, निर्भय बनने और समाज के काम आने का संदेश दिया। रामकृष्ण मिशन की स्थापना ने सेवा के इस विचार को संगठित रूप प्रदान किया।

आज अवसरों और चुनौतियों के बीच खड़े युवाओं के लिए उनका जीवन प्रेरणा है। ज्ञान तभी सार्थक होता है जब वह आत्मविश्वास जगाए और दूसरों का जीवन बेहतर बनाए। विवेकानंद का व्यक्तित्व हमें इसी सक्रिय मानवता की ओर बुलाता है।

चरण 4: निष्कर्ष स्वामी विवेकानंद का जीवन आत्मविश्वास, समन्वय और मानव-सेवा की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर को जन्म-तिथियों की सूची न बनाएँ; किसी रोचक दृश्य से शुरुआत करके विचारों को जीवन से जोड़ें।

अथवा

7. 'मेरा बचपन' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी विषय को अनुभव, दृश्य और मानवीय संवेदना के सहारे रोचक रूप में प्रस्तुत करता है।
- व्यक्तिगत विषय में आत्मीय भाषा, स्मृतियों का क्रम और प्रभावशाली शीर्षक आवश्यक हैं।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति इस विषय में बचपन की किसी जीवंत स्मृति से आरंभ करें। घर, विद्यालय, मित्र, खेल और बड़ों के स्नेह को छोटे प्रसंगों से जोड़ें। अंत में बताएँ कि उन अनुभवों का आज के जीवन में क्या महत्त्व है। फ़ीचर को केवल घटनाओं की सूची न बनाएँ; दृश्य, ध्वनि और अनुभूति उसे सजीव बनाते हैं।

चरण 2: पूरा नमूना फ़ीचर मेरा बचपन: यादों का खुला आँगन

बरसात की पहली बूँद पड़ते ही आज भी मन कागज़ की नाव बनाने लगता है। आँखों के सामने वही छोटा-सा आँगन आ जाता है, जहाँ मेरा बचपन हँसता और दौड़ता था।

सुबह माँ की पुकार से दिन खुलता था। बस्ता उठाते समय विद्यालय जाने की जल्दी से अधिक मित्रों से मिलने का उत्साह होता। छुट्टी की घंटी बजते ही हम मैदान की ओर भागते। कभी कबड्डी, कभी छिपनछिपाई और कभी किसी टूटी टहनी को बल्ला बनाकर खेलना—खुशी के लिए महँगे सामान कहाँ चाहिए थे!

गर्मियों की दोपहर दादी की कहानियों के नाम होती। उनकी आवाज़ में साधारण घटनाएँ भी अद्भुत संसार बन जातीं। शाम को पिता के साथ बाज़ार जाना अपने आप में उत्सव था। रास्ते भर सवाल पूछना और उनके धैर्य से दिए उत्तर सुनना मुझे दुनिया पहचानना सिखाता।

बचपन में रूठना भी जल्दी होता और मनाना भी। मित्र से हुई लड़ाई अगले दिन आधी रोटी बाँटते ही समाप्त हो जाती। छोटी सफलताओं पर गर्व और छोटी हार पर आँसू—हर भावना कितनी सच्ची थी!

आज समय की दौड़ तेज़ है, पर वे स्मृतियाँ भीतर ठहराव देती हैं। मेरा बचपन बीता हुआ समय भर नहीं; वह सादगी, अपनापन और जिज्ञासा की ऐसी पूँजी है जो आज भी जीवन को उजला करती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस फ़ीचर में आत्मीय शीर्षक, अनुभवों के सजीव दृश्य और स्मृतियों से जुड़ा भावपूर्ण समापन दिया गया है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर में सामान्य कथन की जगह कोई दृश्य दिखाएँ; जैसे वर्षा में कागज़ की नाव या दादी की कहानी।

---

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुए चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने । [6 अंक]

8(क). प्रात:काल के आकाश की तुलना किससे की गई है ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में दो वस्तुओं के समान गुण के आधार पर तुलना की जाती है।
- काव्यांश का आरंभिक बिंब भोर के आकाश के रंग और स्वच्छता को मूर्त करता है।

चरण 1: तुलना की पहचान प्रात:काल के आकाश की तुलना बहुत नीले शंख से की गई है। काव्यांश की पहली पंक्ति, "प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे, इस तुलना का स्पष्ट आधार है। यहाँ आकाश उपमेय है और नीला शंख उसका उपमान है।

चरण 2: तुलना का कारण सूर्योदय से पहले का आकाश गहरे नीले रंग का, निर्मल और शांत दिखाई देता है। शंख की चिकनी, स्वच्छ और चमकदार सतह की तरह भोर का नभ भी उजला-साफ़ प्रभाव उत्पन्न करता है। कवि के लिए रंग का साम्य प्रमुख है; साथ ही शंख का बिंब वातावरण की पवित्रता और शांत सौंदर्य को अनुभव करने में सहायता देता है। यह तुलना आकाश के आकार की नहीं, उसके नीले और निर्मल रूप की है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रात:काल का गहरा नीला, स्वच्छ और शांत आकाश नीले शंख जैसा दिखाई देता है; इसलिए कवि ने यह उपमा दी है।

त्वरित सुझाव: पहली पंक्ति से उपमान पहचानें और कारण में उसका आकाश से मिलता हुआ रंग तथा स्वच्छता स्पष्ट करें।

8(ख). राख से लीपा हुआ चौका क्यों कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि परिचित घरेलू वस्तुओं के माध्यम से प्रकृति का सूक्ष्म रंग-चित्र बनाता है।
- राख से लीपे और अभी गीले चौके का बिंब भोर की धूसर आभा तथा नमी को व्यक्त करता है।

चरण 1: चौके के बिंब को समझना कवि ने भोर के नभ को "राख से लीपा हुए चौका कहा है और कोष्ठक में "अभी गीला पड़ा है जोड़कर दृश्य को स्पष्ट किया है। राख से लीपा गया चौका हलका मटमैला या धूसर दिखाई देता है। गीला होने पर उसकी सतह में ताज़गी और नम चमक भी रहती है।

चरण 2: भोर से उसका संबंध भोर में रात का अँधेरा पूरी तरह हटता नहीं और सूर्य का तेज़ प्रकाश भी नहीं फैलता। इस बीच आकाश की धुँधली, धूसर रंगत राख लगे चौके जैसी लगती है। वातावरण की नमी उसे अभी लीपे गए गीले चौके का रूप देती है। इस घरेलू उपमान से कवि केवल रंग नहीं बताता, बल्कि सुबह की ताज़गी और स्वच्छता का आत्मीय अनुभव भी कराता है।

चरण 3: निष्कर्ष भोर का नभ राख से लीपे हुए गीले चौके की तरह धूसर, नम और ताज़ा प्रतीत होता है; इसी साम्य के कारण कवि ने उसे ऐसा कहा है।

त्वरित सुझाव: राख से धूसर रंग और गीले चौके से नमी व ताज़गी जोड़ें; उत्तर के दोनों आधार स्पष्ट हो जाएँगे।

8(ग). भोर के बारे में कवि द्वारा व्यक्त की गई संभावनाओं में आपको कौन-सी सबसे रुचिकर लगी ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रुचि पर आधारित प्रश्न में एक बिंब चुनकर काव्यांश से उसका आधार देना चाहिए।
- स्लेट और लाल खड़िया का बिंब भोर के गहरे आकाश में उभरती लालिमा को सजीव बनाता है।

चरण 1: रुचिकर संभावना का चयन मुझे यह संभावना सबसे रुचिकर लगी कि किसी ने स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल दिया हो। कवि ने इस परिचित दृश्य के माध्यम से भोर के बदलते रंगों को एक ऐसे चित्र में बाँध दिया है, जिसे आँखों के सामने सहज ही लाया जा सकता है।

चरण 2: चयन का कारण स्पष्ट करना स्लेट की गहरी पृष्ठभूमि रात के बचे हुए अँधेरे का बोध कराती है और उस पर फैली लाल खड़िया सूर्य के आने से पहले की लालिमा को व्यक्त करती है। खड़िया के मलने से रंग एक स्थान तक सीमित नहीं रहता, बल्कि फैलता और घुलता है; वैसे ही भोर की लाली धीरे-धीरे आकाश में फैलती है। बचपन में देखी गई स्लेट जैसी साधारण वस्तु से इतना सुंदर प्राकृतिक दृश्य व्यक्त होना इस कल्पना को मेरे लिए विशेष आकर्षक बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष स्लेट पर लाल खड़िया मलने की संभावना मुझे सबसे रुचिकर लगती है, क्योंकि वह गहरे नभ में फैलती लालिमा का सजीव और आत्मीय चित्र बनाती है।

त्वरित सुझाव: किसी एक बिंब को चुनें; फिर उसके रंग, आकार या अनुभव का भोर से संबंध बताकर अपनी पसंद सिद्ध करें।

अथवा

8 अथवा. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता !
मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ । [6 अंक]

8(क). भाव समझाइए : "मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कल्पना में रचा गया जग कवि की निजी भावनाओं, स्वप्नों और आदर्शों का संसार है।
- बार-बार बनाना और मिटाना कवि की स्वतंत्र, निरंतर सक्रिय सृजनशीलता को व्यक्त करता है।

चरण 1: शाब्दिक अर्थ और संकेत "मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता" का अर्थ है कि कवि अपने मन में अनेक संसार बनाता है और उन्हें मिटाकर फिर नए संसार रचता है। यहाँ जग से आशय वास्तविक पृथ्वी नहीं, बल्कि उसकी कल्पना में बनने वाले भावलोक से है। इसलिए पंक्ति को बाहरी संसार के भौतिक विनाश का कथन नहीं माना जा सकता।

चरण 2: पंक्ति का भावार्थ कवि अपने स्वप्नों, प्रेम और आदर्शों के अनुरूप संसार की कल्पना करता है। मन की अनुभूतियाँ और आकांक्षाएँ बदलने पर वह पहले रचे संसार को छोड़कर नया संसार बना लेता है। "मैं और, और जग और" से भी स्पष्ट है कि उसकी जीवन-दृष्टि सामान्य संसार से भिन्न है। वह दूसरों के बनाए ढाँचे में अपनी संवेदना को बाँधने के स्थान पर अपने लिए स्वतंत्र भाव-जगत रचता है। इस प्रकार पंक्ति उसके कल्पनाशील, सृजनशील और स्वतंत्र व्यक्तित्व का परिचय देती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि अपने मन में स्वप्नों और भावनाओं के अनेक संसार रचता और मिटाता रहता है। पंक्ति उसकी स्वतंत्र कल्पनाशक्ति और निरंतर सृजनशीलता का भाव व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में जग को कल्पना-लोक समझाएँ और बनाने-मिटाने को मन की सृजन-प्रक्रिया से जोड़ें।

8(ख). पृथ्वी को ठुकराने का क्या कारण है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पृथ्वी यहाँ उस सांसारिक जीवन का संकेत है जहाँ लोग धन और वैभव संचित करते हैं।
- कवि की जीवन-दृष्टि भौतिक संपन्नता के स्थान पर भावनाओं और आत्मिक स्वतंत्रता को महत्त्व देती है।

चरण 1: पंक्तियों में कारण का आधार कवि कहता है, "जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव, / मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता !" संसार के लोग उसी पृथ्वी पर धन, संपत्ति और सुख-सुविधाएँ जुटाने में लगे रहते हैं। उनके लिए वैभव अर्जित करना जीवन का महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है। कवि की दृष्टि और रुचि इस सामान्य सांसारिक प्रवृत्ति से अलग है।

चरण 2: ठुकराने का आशय कवि को सांसारिक वैभव आकर्षित नहीं करता। वह अपने निजी भाव-जगत, प्रेम और संवेदना को धन-संपत्ति से अधिक मूल्यवान मानता है, इसलिए वैभव जुटाने की होड़ में सम्मिलित नहीं होता। पृथ्वी को ठुकराना इसी भौतिक मोह और संचय की

प्रवृत्ति का अस्वीकार है। यह पृथ्वी के भौतिक अस्तित्व को नष्ट करने या प्रकृति से घृणा करने का कथन नहीं है। उसकी स्वतंत्र जीवन-दृष्टि उसे संसार की धन-केंद्रित प्राथमिकताओं से दूर रखती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि पृथ्वी को इसलिए ठुकराता है कि संसार जिस धन-वैभव को जोड़ने में लगा है, उससे उसे मोह नहीं है। उसके लिए प्रेम, संवेदना और अपने मन की स्वतंत्रता अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में "जोड़ा करता वैभव" को आधार बनाएँ और ठुकराने को धन-संचय के मोह से विरक्ति बताएँ।

8(ग). कवि ने स्वयं को खंडहर का भाग क्यों कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खंडहर कवि के टूटे हृदय, दुख और अभाव का प्रतीक है।
- राजाओं के प्रासाद और खंडहर का विरोध भौतिक वैभव के ऊपर आंतरिक भाव-संपदा का मूल्य स्थापित करता है।

चरण 1: खंडहर से अपना संबंध कवि अपने जीवन में दुख और टूटन का अनुभव करता है। इसीलिए वह अपने को खंडहर के भाग का वाहक कहता है। खंडहर जिस प्रकार उजड़े हुए भवन और बिखरे वैभव का बोध कराता है, उसी प्रकार यह प्रतीक कवि के आहत हृदय और पीड़ा से भरे जीवन का संकेत देता है। "मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ" से भी उसके भीतर दुख और काव्य-संगीत के साथ रहने का पता चलता है।

चरण 2: खंडहर का मूल्य और प्रासाद से तुलना कवि इस दुखपूर्ण जीवन को हीन नहीं मानता। वह कहता है कि उसके खंडहर पर राजाओं के प्रासाद भी न्योछावर किए जा सकते हैं। आशय है कि उसके टूटे हृदय में प्रेम, संवेदना और अनुभव की ऐसी समृद्धि है जिसका मूल्य राजसी महलों के बाहरी वैभव से अधिक है। इसलिए खंडहर का भाग कहना केवल अपनी दुर्दशा बताना नहीं है; यह अपनी पीड़ा और भीतरी भाव-संपदा को गर्व तथा स्वाभिमान के साथ स्वीकार करना भी है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का हृदय दुख और टूटन से भरा है, इसलिए उसने स्वयं को खंडहर का भाग कहा है। फिर भी उसकी आंतरिक संवेदना इतनी मूल्यवान है कि उसके सामने राजाओं के प्रासादों का वैभव भी तुच्छ है।

त्वरित सुझाव: खंडहर की व्याख्या में कवि की पीड़ा के साथ उस पर निछावर होने वाले राजप्रासादों की तुलना भी लिखें।

9. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए सौंदर्य बोधपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

आख़िरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था
ज़ोर-ज़बरदस्ती से
बात की चूड़ी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी
हारकर मैंने उसे कील की तरह
उसी जगह ठोंक दिया [4 अंक]

9(क). कविता का शिल्प-सौंदर्य समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में सहज कथ्य और कृत्रिम भाषिक जटिलता के संबंध को मूर्त बिंबों से समझाया गया है।
- सौंदर्य-बोध में भाव और उसे व्यक्त करने वाली भाषा, बिंब तथा शैली का संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: भाषा और शैली काव्यांश की भाषा सरल, बोलचाल की और मुहावरेदार है। ज़ोर-ज़बरदस्ती, बेकार घूमने और ठोंक देने जैसे प्रयोग परिचित दैनिक अनुभवों को कविता में लाते हैं। मुक्तछंद और छोटी-बड़ी पंक्तियों से बोलचाल की सहज लय बनती है। कथन में व्यंग्य भी है, क्योंकि बात को प्रभावशाली बनाने का अत्यधिक प्रयत्न उसे अर्थहीन कर देता है।

चरण 2: बिंबों की सजीवता चूड़ी मरने का प्रयोग पेंच के घिसकर निष्प्रभावी हो जाने का मूर्त बिंब है। उसके माध्यम से भाषा में कथ्य की पकड़ समाप्त होना बताया गया है। कील की तरह ठोंकने का बिंब बात को जबरन स्थिर कर देने का संकेत देता है। अमूर्त बात को वस्तु जैसा व्यवहार मिलने से उसका संकट दृश्य और सहज बोधगम्य बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष सरल मुहावरेदार भाषा, मुक्तछंद की बोलचाल वाली लय, व्यंग्य और पेंच-कील के मूर्त बिंब इस काव्यांश के प्रमुख शिल्पगत आकर्षण हैं।

त्वरित सुझाव: शिल्प-सौंदर्य में केवल अलंकार का नाम न दें; भाषा, लय और बिंब का प्रभाव भी समझाएँ।

9(ख). कविता का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में सहज कथ्य और कृत्रिम भाषिक जटिलता के संबंध को मूर्त बिंबों से समझाया गया है।
- सौंदर्य-बोध में भाव और उसे व्यक्त करने वाली भाषा, बिंब तथा शैली का संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: कथ्य पर बल प्रयोग का परिणाम कवि जिस आशंका से डरता था, वही घटित होती है। सीधी बात को भाषा की जटिलता में प्रभावशाली बनाने का आग्रह उसके स्वाभाविक अर्थ को नष्ट कर देता है। जैसे पेंच की चूड़ी घिस जाए तो वह घूमता रहता है, पर अपनी पकड़ नहीं बना पाता, वैसे ही बात भाषा में उपस्थित रहकर भी आशय को व्यक्त करने में असमर्थ हो जाती है।

चरण 2: सहज अभिव्यक्ति का महत्व हारकर बात को कील की तरह ठोंकना अभिव्यक्ति की असफलता को दिखाता है। कथ्य को समझकर सहज रूप देना चाहिए था, लेकिन कवि उसे दबाव से जमा देने का प्रयास करता है। इस स्थिति के चित्रण में आत्मव्यंग्य और रचनात्मक विवशता है। कविता बताती है कि भाषा का अनावश्यक चमत्कार विचार की स्पष्टता तथा संप्रेषण की शक्ति को क्षति पहुँचाता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य इस चेतावनी में है कि भाषिक आडंबर और बलपूर्वक अभिव्यक्ति से बात का मर्म खो जाता है; सफल रचना के लिए कथ्य के अनुकूल सहज भाषा आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य बताते समय चूड़ी मरने को अर्थ की पकड़ छूटने और कील ठोंकने को विवशता से जोड़ें।

अथवा

9 अथवा. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए सौंदर्य बोधपरक प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

नहला के छलके-छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
जब घुटनियों में लेके हैं पिन्हाती कपड़े [4 अंक]

9(क). कविता के भाव-सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश का केंद्र माँ का वात्सल्य और बच्चे का माँ के प्रति सहज प्रेम तथा विश्वास है।
- भाव-सौंदर्य समझाते समय स्नान, केश सँवारने और कपड़े पहनाने की घरेलू क्रियाओं को मातृस्नेह से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: माँ के स्नेह का स्वाभाविक चित्र माँ बच्चे को स्वच्छ जल से नहलाती है, उसके उलझे बालों में कंघी करती है और घुटनों के बीच लेकर उसे कपड़े पहनाती है। इन सामान्य घरेलू क्रियाओं में उसकी ममता, सावधानी और आत्मीयता व्यक्त होती है। माँ के लिए बच्चे की देखभाल स्नेह की सहज अभिव्यक्ति है। कवि ने इसी परिचित दृश्य में मातृत्व का कोमल सौंदर्य पहचाना है।

चरण 2: बच्चे का प्रेम और पारस्परिक आत्मीयता कपड़े पहनाए जाते समय बच्चा माँ का मुँह बड़े प्यार से देखता है। उसकी यह नज़र माँ के प्रति विश्वास, लगाव और निर्भरता को व्यक्त करती है। माँ का दुलार और बच्चे की प्रेमभरी दृष्टि मिलकर वात्सल्य का मार्मिक दृश्य रचते हैं। यहाँ स्नेह दोनों ओर से प्रकट होता है; बच्चे की निश्छलता इस घरेलू प्रसंग को और भी भावपूर्ण बना देती है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य माँ के निस्वार्थ वात्सल्य और बच्चे के निश्छल प्रेम के जीवंत चित्रण में है। दैनिक देखभाल का दृश्य माँ-बच्चे के आत्मीय संबंध को अत्यंत कोमल रूप में व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य में माँ की देखभाल और बच्चे की प्यारभरी दृष्टि, दोनों के आधार पर वात्सल्य स्पष्ट करें।

9(ख). काव्यांश की भाषा की दो विशेषताएँ समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की विशेषता बताते समय काव्यांश का शब्द या वाक्यांश उद्धृत करके उसका प्रभाव समझाना आवश्यक है।
- इस रुबाई की भाषा बोलचाल की हिंदुस्तानी है और क्रियाओं के माध्यम से घरेलू दृश्य साकार करती है।

चरण 1: सहज हिंदुस्तानी शब्दावली पहली विशेषता सहज, बोलचाल की हिंदुस्तानी भाषा है। निर्मल और जल जैसे हिंदी शब्दों के साथ गेसुओं और पिन्हाती जैसे उर्दू तथा लोकप्रचलित प्रयोग आए हैं। नहला के और कंघी करके जैसे पद घरेलू बातचीत के निकट हैं। यह सहज शब्दावली माँ और बच्चे के संबंध को कृत्रिमता से मुक्त, आत्मीय तथा स्वाभाविक बनाती है।

चरण 2: चित्रात्मक और लयपूर्ण अभिव्यक्ति दूसरी विशेषता चित्रात्मकता है। नहलाने, उलझे बालों में कंघी करने और घुटनों में लेकर कपड़े पहनाने की क्रियाएँ पाठक के सामने सजीव दृश्य उपस्थित करती हैं। छलके-छलके की पुनरावृत्ति जल के छलकने का अनुभव कराती है और भाषा में लय लाती है। किस प्यार से जैसे सहज प्रयोग बच्चे की प्रेमभरी दृष्टि को मूर्त बनाकर दृश्य की कोमलता बढ़ाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा की दो प्रमुख विशेषताएँ सहज हिंदुस्तानी शब्दावली और चित्रात्मक अभिव्यक्ति हैं। परिचित शब्द तथा सजीव क्रियाएँ वात्सल्य के भाव को प्रभावी बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा के उत्तर में गेसुओं जैसे शब्द और नहलाने-कंघी करने के दृश्य देकर प्रत्येक विशेषता का प्रभाव समझाएँ।

10(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'पतंग' कविता में बच्चों की तुलना कपास से क्यों की गई है, आपको यह कहाँ तक उचित लगता है ? तर्क सहित उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पतंग में बच्चों का उल्लास, चंचलता और कल्पना की उड़ान प्रकृति के बिंबों से व्यक्त हुई है।
- उपमा की संगति उसके साझा गुण से सिद्ध की जाती है; यहाँ कपास का हलकापन और कोमलता प्रमुख हैं।

चरण 1: कपास से तुलना का कारण कपास हलकी और कोमल होती है। पतंग उड़ाने वाले बच्चे भी उत्साह में इतने मग्न हैं कि उन्हें अपने शरीर के भार का अनुभव नहीं होता। दौड़ते, उछलते और आकाश की ओर देखते हुए वे मानो धरती के बंधनों से मुक्त हो जाते हैं। कपास का बिंब उनकी इसी हलकी, कोमल और उमंग से भरी स्थिति को साकार करता है।

चरण 2: बचपन के अनुभव की अभिव्यक्ति पतंग के साथ बच्चों की इच्छाएँ और कल्पनाएँ भी ऊपर उठती हैं। खेल में तल्लीन बालक थकान, सावधानी और बड़ों जैसी चिंताओं को भूल जाते हैं। उनके लिए आकाश आकर्षण और संभावनाओं से भरा है। इसलिए कपास की तरह हलका होना केवल शारीरिक भार का वर्णन नहीं है; यह मन की मुक्त और उत्साहपूर्ण अवस्था का भी संकेत है।

चरण 3: तुलना की उपयुक्तता पर तर्क यह तुलना उचित है, क्योंकि कपास का कोमल और हलका रूप बच्चों की कोमलता तथा खेलते समय उनके हलकेपन के अनुभव से मेल खाता है। इससे उनकी चंचल गति और कल्पनाशीलता का जीवंत चित्र बनता है। तुलना का अर्थ यह नहीं कि उनका वास्तविक शरीर भारहीन है; कवि आनंद में डूबे बचपन का भावात्मक सत्य व्यक्त करता है। इसी कारण यह बिंब सहज और प्रभावपूर्ण लगता है।

चरण 4: निष्कर्ष कवि ने बच्चों की तुलना कपास से उनकी कोमलता, हलकेपन और उमंगपूर्ण गति के कारण की है। यह तुलना उचित है, क्योंकि पतंग उड़ाते समय उनका तन-मन उल्लास से भरकर भार और चिंताओं से मुक्त प्रतीत होता है।

त्वरित सुझाव: कपास के हलकेपन को बच्चों के शारीरिक उत्साह और मानसिक मुक्तता, दोनों से जोड़कर उपमा का औचित्य बताएँ।

10(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : तुलसीदास ने तत्कालीन आर्थिक स्थिति का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है, वर्तमान सन्दर्भ में उसकी चर्चा कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास की कवितावली में आजीविका का संकट समाज के विभिन्न वर्गों को प्रभावित करता है।
- कविता की वर्तमान प्रासंगिकता समझने के लिए रोज़गार, भूख और आर्थिक असमानता पर ध्यान देना चाहिए।

चरण 1: तत्कालीन आर्थिक स्थिति तुलसीदास ने अपने समय में खेती, व्यापार और नौकरी से जुड़े लोगों की दयनीय दशा दिखाई है। किसान को खेती से पर्याप्त उपज नहीं मिलती, भिखारी को भीख नहीं मिलती, व्यापारी का व्यापार नहीं चलता और सेवक को नौकरी नहीं मिलती। इस प्रकार आजीविका के साधन होते हुए भी आम आदमी जीविका से वंचित है। पेट की आग इतनी तीव्र है कि लोग जीविका के लिए अनुचित उपाय तक अपनाने को विवश हो जाते हैं। यह चित्र आर्थिक अव्यवस्था और जनसाधारण की असहायता को सामने लाता है।

चरण 2: वर्तमान संदर्भ से संबंध आज साधन और उत्पादन बढ़े हैं, फिर भी बेरोज़गारी, महँगाई, किसानों की आय का संकट तथा अमीर-गरीब का बढ़ता अंतर अनेक लोगों को परेशान करते हैं। मेहनत के बाद भी पर्याप्त भोजन, शिक्षा और इलाज का अभाव मिलता है। इसलिए तुलसीदास का चित्र आज भी प्रासंगिक है। परिस्थितियाँ पूरी तरह समान नहीं हैं, पर रोज़ी-रोटी की असुरक्षा और विषमता का मूल प्रश्न अब भी बना हुआ है। कविता केवल गरीबी का वर्णन नहीं करती, बल्कि ऐसी व्यवस्था पर प्रश्न उठाती है जिसमें श्रम करने वाले भी सम्मानजनक जीवन नहीं जी पाते।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसीदास का आर्थिक चित्रण वर्तमान समाज में भी रोज़गार, भूख और विषमता पर विचार करने की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: पहले कविता में बताए गए जीविका-संकट को लिखें, फिर उससे मिलती आज की समस्याओं का संबंध स्पष्ट करें।

10(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : भाषा को सहूलियत से बरतने से कवि का क्या आशय है ? 'बात सीधी भी पर' के आधार पर उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव की स्पष्टता और भाषा की सहजता अच्छे संप्रेषण का आधार हैं।
- कवि कृत्रिम शब्दजाल के स्थान पर बात के अनुकूल भाषा बरतने की सीख देता है।

चरण 1: सहूलियत से भाषा बरतने का आशय भाषा को सहूलियत से बरतने का आशय है कि उसे सहज, स्वाभाविक और भाव के अनुकूल ढंग से प्रयोग किया जाए। जो बात सरल है, उसे केवल प्रभावशाली दिखाई देने के लिए कठिन शब्दों, अनावश्यक अलंकारों और पेचीदा वाक्यों में नहीं उलझाना चाहिए। भाषा विचार को पाठक तक पहुँचाने का साधन बने। शब्दों के चुनाव में सजगता आवश्यक है, पर शब्दों का दिखावा मूल कथ्य पर हावी नहीं होना चाहिए।

चरण 2: कविता के प्रसंग से स्पष्टीकरण कविता में कवि सीधी बात को भाषा के चक्कर में उलझा देता है। उसे अधिक सुंदर और प्रभावशाली बनाने की कोशिश में वह बात की सहजता खो देता है। उलझन सुलझाने के लिए अतिरिक्त ज़ोर लगाने पर बात और बिगड़ती है। अंततः यह बोध उभरता है कि भाषा को अनावश्यक रूप से कसने-मोड़ने से कथ्य का प्रभाव घटता है। सहज भाषा में व्यक्त भाव अधिक स्पष्ट और अर्थपूर्ण रहता है। यह सरलता लापरवाही नहीं, अभिव्यक्ति का विवेक है। कविता में बात की पेचीदगी और भाषा का बिगड़ना अभिव्यक्ति की विफलता को सामने लाते हैं। अतः कवि को पहले अपने भाव को समझकर उसके अनुकूल शब्द चुनने चाहिए, ताकि पाठक मूल आशय से जुड़ा रह सके।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का आशय भाषा का स्वाभाविक और सटीक प्रयोग करना है, जिससे सीधी बात अपनी स्पष्टता तथा प्रभाव बनाए रखे।

त्वरित सुझाव: सहज भाषा को असावधान भाषा न समझें; उत्तर में कथ्य की स्पष्टता और अनावश्यक शब्दजाल से बचाव को जोड़ें।

10(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'कविता के बहाने' चिड़िया और कविता की तुलना क्यों नहीं की जा सकती ? स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चिड़िया की उड़ान भौतिक है, जबकि कविता की उड़ान कल्पना और संवेदना की है।
- कविता में सीमित प्रकृति और असीम मानवीय सृजनशीलता का अंतर उभरता है।

चरण 1: चिड़िया की उड़ान की सीमा चिड़िया आकाश में उड़ती है, किंतु उसकी उड़ान शारीरिक क्षमता, स्थान और समय की सीमाओं में बँधी रहती है। वह एक वास्तविक प्राणी है; इसलिए उसका संसार प्रत्यक्ष प्रकृति से जुड़ा है। वह अपने पंखों से जितनी दूर पहुँच सकती है, उसकी भौतिक पहुँच उतनी ही है। कविता के लिए चिड़िया की उड़ान सुंदर आरंभिक बिंब अवश्य बनती है, किंतु वह कविता की समूची शक्ति का माप नहीं हो सकती।

चरण 2: कविता की उड़ान की व्यापकता कविता कल्पना, भावना और विचार के सहारे किसी भी देश, काल या अनुभव तक पहुँच सकती है। वह बाहर की दुनिया के साथ मनुष्य के भीतर की दुनिया में भी प्रवेश करती है। उसका प्रभाव अलग-अलग समय और स्थान के पाठकों तक फैलता है। इसलिए चिड़िया कविता की असीम उड़ान को पूरी तरह नहीं जान सकती। कवि दोनों में उड़ान की समानता दिखाकर उनकी सीमाओं का अंतर स्पष्ट करता है; कविता को चिड़िया की भौतिक उड़ान के बराबर नहीं बाँधा जा सकता। कविता मनुष्य के अनुभवों को नई अर्थवत्ता देती है और परिचित संसार में भी नई संभावनाएँ खोलती है। इसीलिए उसकी उड़ान केवल आकाश में दूरी तय करने तक सीमित नहीं रहती।

चरण 3: निष्कर्ष चिड़िया की सीमित भौतिक उड़ान और कविता की असीम कल्पनात्मक उड़ान के कारण दोनों की पूर्ण समानता नहीं की जा सकती।

त्वरित सुझाव: तुलना का आधार उड़ान है; अंतर समझाते समय चिड़िया की भौतिक सीमा और कविता की कल्पनात्मक व्यापकता अलग लिखें।

11. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

इन बातों को आज पचास से ज़्यादा वर्ष होने को आए पर ज्यों-की-त्यों मन पर दर्ज हैं । कभी-कभी कैसे-कैसे संदर्भों में ये बातें मन को कचोट जाती हैं, हम आज देश के लिए क्या करते हैं ? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नामोनिशान नहीं है । अपना स्वार्थ आज एक मात्र लक्ष्य रह गया है । हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम इसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं ? काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं पानी झमाझम बरसता है पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है बैल प्यासे के प्यासे रह जाते हैं आख़िर कब बदलेगी यह स्थिति ? [6 अंक]

11(क). 'कब बदलेगी यह स्थिति' पूछकर लेखक ने किस बात की ओर संकेत किया है ? आपके विचार से यह कैसे बदल सकती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक उपलब्ध संसाधनों और जनसाधारण तक उनके लाभ पहुँचने के अंतर पर प्रश्न उठाता है।
- परिवर्तन की शुरुआत आत्मपरीक्षण, त्याग तथा ईमानदार सार्वजनिक आचरण से होती है।

चरण 1: संकेतित स्थिति लेखक उस स्वार्थपूर्ण और भ्रष्ट व्यवस्था की ओर संकेत करता है जिसमें देश में साधन होने पर भी जरूरतमंद लोगों की आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं। लोग बड़ी-बड़ी माँगें करते हैं, लेकिन देश और समाज के लिए त्याग नहीं करते। दूसरों के भ्रष्टाचार की चर्चा करते हुए वे अपने आचरण की जाँच भी नहीं करते।

चरण 2: परिवर्तन का उपाय यह स्थिति तभी बदलेगी जब हम स्वयं को सुधारें, अपने स्तर पर भ्रष्टाचार में भागीदार न बनें और निजी लाभ से ऊपर सामूहिक हित रखें। संसाधनों का ईमानदार उपयोग और उनका जरूरतमंदों तक पहुँचना सुनिश्चित करना होगा। केवल शिकायत के स्थान पर जिम्मेदार व्यवहार तथा सहयोग अपनाने से वास्तविक परिवर्तन संभव है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक स्वार्थ और भ्रष्टाचार से उपजी जनवंचना बदलने की अपेक्षा करता है; आत्मसुधार और सामाजिक उत्तरदायित्व इसका मार्ग हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दोनों हिस्से लिखें: पहले स्थिति का अर्थ, फिर उसे बदलने के लिए अपने आचरण और व्यवस्था में जरूरी सुधार।

11(ख). लेखक को कैसी बातें कचोटती हैं ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में लेखक माँग और त्याग के बीच बढ़ते अंतर से व्यथित है।
- दूसरों की आलोचना से पहले अपने आचरण की जाँच करना सामाजिक जिम्मेदारी है।

चरण 1: कचोटने वाली बातें लेखक को यह बात कचोटती है कि लोग देश से बहुत कुछ चाहते हैं, पर उसके लिए त्याग करने को तैयार नहीं हैं। निजी स्वार्थ उनका मुख्य लक्ष्य बन गया है। वे दूसरों के भ्रष्टाचार की चटखारे लेकर चर्चा करते हैं, पर यह नहीं जाँचते कि अपने छोटे दायरे में वे भी उसी भ्रष्टाचार का हिस्सा तो नहीं हैं।

चरण 2: व्यथा का कारण इन प्रवृत्तियों के कारण संसाधन और अवसर उपलब्ध होने पर भी उनका लाभ जरूरतमंद जनता तक नहीं पहुँचता। बरसते पानी के बावजूद गगरी का खाली और बैलों का प्यासा रहना इसी विफलता को व्यक्त करता है। लेखक को दुख है कि लंबे समय के बाद भी सामूहिक हित के लिए त्याग और ईमानदार आचरण का अभाव बना हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष देश के प्रति त्याग का अभाव, स्वार्थ और अपने भ्रष्ट आचरण की अनदेखी लेखक को कचोटते हैं, क्योंकि इनसे जनहित बाधित होता है।

त्वरित सुझाव: गद्यांश से माँग, त्याग, स्वार्थ और आत्मपरीक्षण के बिंदु चुनकर उनके सामाजिक परिणाम से कारण स्पष्ट करें।

11(ग). पानी, गगरी और बैल का प्रतीकार्थ समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीकों में प्रत्यक्ष वस्तुएँ व्यापक सामाजिक अर्थ व्यक्त करती हैं।
- पानी की उपलब्धता और प्यास का बने रहना संसाधनों के निष्फल वितरण का विरोधाभास दिखाता है।

चरण 1: पानी और गगरी का अर्थ पानी देश में उपलब्ध साधनों, सहायता और विकास के अवसरों का प्रतीक है, जिनसे जनता का जीवन सुधरना चाहिए। गगरी उन व्यवस्थाओं और माध्यमों का प्रतीक है जिनसे ये साधन लोगों तक पहुँचते हैं। गगरी का फूटा होना व्यवस्था की कमियों, स्वार्थ और भ्रष्टाचार की ओर संकेत करता है; इसलिए साधन टिकते नहीं और उपयोगी परिणाम नहीं दे पाते।

चरण 2: बैल और पूरे बिंब का आशय प्यासे बैल मेहनतकश तथा जरूरतमंद जनसाधारण का प्रतीक हैं, जिन्हें इन साधनों का वास्तविक लाभ मिलना चाहिए। खूब पानी बरसने पर भी उनका प्यासा रहना बताता है कि संसाधनों की उपलब्धता मात्र पर्याप्त नहीं है। जब तक उन्हें पहुँचाने वाली व्यवस्था की खराबी दूर नहीं होगी, सामान्य लोगों की आवश्यकताएँ अधूरी ही रहेंगी।

चरण 3: निष्कर्ष पानी संसाधनों का, फूटी गगरी दोषपूर्ण व्यवस्था का और प्यासे बैल लाभ से वंचित मेहनतकश जनता का प्रतीक हैं।

त्वरित सुझाव: तीनों प्रतीकों को अलग पहचानें, फिर पानी होने पर भी प्यास रहने के विरोधाभास से उनका संयुक्त आशय स्पष्ट करें।

अथवा

11 अथवा. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र को कई रसों का पता है उनमें कुछ रसों का किसी कलाकृति में साथ-साथ पाया जाना श्रेयस्कर भी माना गया है जीवन में हर्ष और विषाद आते रहते हैं यह संसार की सारी सांस्कृतिक परम्पराओं को मालूम है लेकिन करुणा का हास्य में बदल जाना एक ऐसे सिद्धांत की माँग करता है जो भारतीय परम्पराओं में नहीं मिलता । रामायण तथा महाभारत में जो हास्य है वह 'दूसरों' पर है और अधिकांशत: परसंताप प्रेरित है । जो करुणा है वह अकसर सद्व्यक्तियों के लिए और कभी-कभार दुष्टों के लिए है । [6 अंक]

11(क). भारतीय सौंदर्यशास्त्र में प्रयुक्त रसों की क्या विशेषता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रस कलाकृति से प्राप्त होने वाली भावात्मक अनुभूति है। प्रस्तुत अंश में भारतीय सौंदर्यशास्त्र की रस संबंधी दृष्टि स्पष्ट की गई है।
- उत्तर में अनेक रसों की पहचान तथा एक कलाकृति में कुछ रसों के सहअस्तित्व, दोनों विशेषताओं का उल्लेख आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश में रसों की पहचान गद्यांश के अनुसार भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र को कई रसों का ज्ञान है। इसका आशय है कि कला में उत्पन्न अनुभूतियों को केवल एक ही भाव तक सीमित नहीं माना गया है। हर्ष और विषाद जैसे अलग भावों की पहचान इस व्यापक दृष्टि को व्यक्त करती है।

चरण 2: रसों के सहअस्तित्व की विशेषता कुछ रसों का किसी एक कलाकृति में साथ-साथ पाया जाना भी श्रेयस्कर माना गया है। इसलिए किसी रचना में अनेक भावों की उपस्थिति अपने आप में दोष नहीं है। यहाँ ध्यान देने योग्य शब्द 'कुछ रस' हैं; अंश यह नहीं कहता कि सभी रसों का हर परिस्थिति में मेल उचित है।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीय सौंदर्यशास्त्र अनेक रसों को पहचानता है और कुछ रसों की एक ही कलाकृति में संयुक्त उपस्थिति को श्रेष्ठ तथा वांछनीय मानता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में 'अनेक रसों का ज्ञान' और 'कुछ रसों का साथ-साथ होना श्रेयस्कर', दोनों बातें स्पष्ट लिखें।

11(ख). करुणा के संदर्भ में भारतीय परम्परा में क्या मान्यता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- करुणा दूसरे के दुःख के प्रति संवेदना का भाव है। प्रस्तुत गद्यांश भारतीय परंपरा में इसके पात्रों और हास्य से इसके संबंध की चर्चा करता है।
- उत्तर केवल दिए गए गद्यांश के कथन पर आधारित होना चाहिए; उसमें करुणा के पात्र सद्व्यक्ति और कभी-कभार दुष्ट बताए गए हैं।

चरण 1: करुणा के पात्रों को पहचानना गद्यांश कहता है कि भारतीय परंपरा में करुणा प्रायः सद्व्यक्तियों के प्रति व्यक्त होती है। उनके दुःख और कष्ट पाठक या दर्शक की सहानुभूति जगाते हैं। कभी-कभी दुष्ट व्यक्ति भी करुणा के पात्र होते हैं; इसलिए यह कहना ठीक नहीं कि दुष्टों के लिए करुणा बिल्कुल नहीं होती।

चरण 2: करुणा और हास्य का संबंध स्पष्ट करना अंश के अनुसार करुणा का हास्य में बदल जाना ऐसे सिद्धांत की माँग करता है जो भारतीय परंपराओं में नहीं मिलता। हर्ष और विषाद का जीवन में आते रहना स्वीकार है, पर उसे करुणा के हास्य में रूपांतरण की स्वीकृति नहीं समझना चाहिए। दोनों बातें अलग हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीय परंपरा में करुणा मुख्यतः सद्व्यक्तियों और कभी-कभार दुष्टों के लिए होती है। गद्यांश के अनुसार करुणा को हास्य में बदलने का सिद्धांत इस परंपरा में नहीं मिलता।

त्वरित सुझाव: 'अकसर' और 'कभी-कभार' का अंतर बनाए रखें तथा करुणा से हास्य बनने संबंधी कथन भी जोड़ें।

11(ग). रामायण और महाभारत में प्रायः कैसा हास्य मिलता है ? आप इससे कहाँ तक सहमत हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न गद्यांश में व्यक्त हास्य संबंधी विचार को समझने तथा उस पर तर्कपूर्ण सहमति देने की क्षमता जाँचता है।
- परसंताप प्रेरित हास्य दूसरों की पीड़ा या परेशानी से उत्पन्न होने वाला हास्य है; इसे आत्महास से अलग समझना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश का कथन स्पष्ट करना गद्यांश के अनुसार रामायण तथा महाभारत में पाया जाने वाला हास्य दूसरों पर केंद्रित है। वह अधिकांशतः परसंताप से प्रेरित है, अर्थात दूसरे की परेशानी या दुःख को देखकर हँसी पैदा होती है। इसका आधार अपनी कमियों पर सहज हँसना नहीं, बल्कि दूसरे की स्थिति को हास्य का विषय बनाना है।

चरण 2: सहमति का आधार और सीमा गद्यांश में प्रस्तुत विवेचन की सीमा में मैं इस मत से सहमत हूँ, क्योंकि दूसरों को उपहास का लक्ष्य बनाने वाला हास्य उनकी पीड़ा से जुड़ सकता है। फिर भी लेखक ने 'अधिकांशतः' कहा है; अतः इसे हर हास्य प्रसंग पर लागू होने वाला निरपवाद नियम नहीं मानना चाहिए। कथन की यह सीमा बनाए रखने से सहमति संतुलित रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष इन महाकाव्यों में प्रायः दूसरों पर केंद्रित, परसंताप प्रेरित हास्य मिलता है। मैं गद्यांश के इस सामान्य विवेचन से सहमत हूँ, पर इसे सभी हास्य प्रसंगों का एकमात्र रूप नहीं मानता।

त्वरित सुझाव: पहले 'दूसरों पर' और 'परसंताप प्रेरित' लिखें, फिर अपनी सहमति का कारण और 'अधिकांशतः' की सीमा बताएँ।

12(क). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : लुट्टन के सिर पर कसरत की धुन क्यों सवार हुई ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लुट्टन के बचपन की परिस्थिति उसके शरीर बनाने के संकल्प का कारण बनती है।

- कसरत की प्रेरणा को उसके ससुराल के सामाजिक व्यवहार से जोड़कर समझना आवश्यक है।

चरण 1: पारिवारिक परिस्थिति समझें लुट्टन के माता-पिता उसके बचपन में ही मर गए थे। उसकी शादी हो चुकी थी और उसकी विधवा सास ने उसे पाल-पोसकर बड़ा किया था। इसलिए उसका जीवन अपनी सास के संरक्षण में बीता।

चरण 2: कसरत की प्रेरणा स्पष्ट करें गाँव के लोग उसकी सास को तरह-तरह की तकलीफ़ दिया करते थे। उनसे बदला लेने और उनका सामना करने योग्य बल प्राप्त करने के लिए लुट्टन के सिर पर कसरत की धुन सवार हुई। वह नियमित व्यायाम करके शरीर को मज़बूत बनाने लगा।

चरण 3: निष्कर्ष सास को परेशान करने वाले गाँववालों से बदला लेने के लिए शक्तिशाली बनने की इच्छा ने लुट्टन को कसरत का दीवाना बना दिया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल पहलवान बनने की इच्छा न लिखें; सास के प्रति गाँववालों के दुर्व्यवहार का कारण अवश्य जोड़ें।

12(ख). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : भक्तिन पाठ की लेखिका किस कार्य में असमर्थ हैं और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा और भक्तिन का संबंध केवल सेविका और स्वामिनी का संबंध नहीं है।
- पाठ के अंत में लेखिका की असमर्थता भक्तिन के आत्मीय और स्थायी साथ को प्रकट करती है।

चरण 1: असमर्थता का स्पष्ट उल्लेख करें लेखिका भक्तिन की जीवन-कथा को समाप्त करने में असमर्थ हैं। वह उसकी कहानी को कोई निश्चित अंत नहीं दे सकतीं। यह असमर्थता लिखने की योग्यता का अभाव नहीं, बल्कि भक्तिन के साथ उनके ऐसे संबंध का परिणाम है जिसे वे समाप्त मान ही नहीं सकतीं।

चरण 2: भक्तिन से संबंध की प्रकृति समझें लेखिका भक्तिन को केवल अपने यहाँ काम करने वाली सेविका नहीं मानतीं। भक्तिन उनके जीवन और कामकाज से गहराई से जुड़ी हुई है। वह लेखिका को छोड़कर जाने की कल्पना नहीं करती और कठिन समय में भी उनके साथ रहने को तैयार रहती है। इसलिए उसके जीवन को एक अलग, पूरी हो चुकी कहानी की तरह प्रस्तुत करना लेखिका के लिए संभव नहीं है।

चरण 3: कथा के अंत की समस्या का कारण बताएँ लेखिका भक्तिन से अलगाव की कल्पना नहीं कर पातीं। भक्तिन की कथा का अंत करने का अर्थ उनके जीवन में उसके साथ का अंत मान लेना होगा, जबकि यह संबंध निरंतर बना हुआ है। लेखिका का कथन इस आत्मीयता और अभिन्न साहचर्य को व्यक्त करता है। अतः उत्तर को भक्तिन की किसी आदत को सुधार न पाने तक सीमित करना प्रश्न के केंद्रीय आशय को छोड़ देगा।

चरण 4: निष्कर्ष लेखिका भक्तिन की कथा समाप्त करने में असमर्थ हैं, क्योंकि वे उसके साथ के अंत की कल्पना नहीं कर सकतीं। भक्तिन उनके जीवन का अभिन्न और आत्मीय अंग बन चुकी है।

त्वरित सुझाव: "किस कार्य में असमर्थ" का उत्तर पहले स्पष्ट लिखें, फिर भक्तिन से लेखिका के अभिन्न संबंध द्वारा उसका कारण समझाएँ।

12(ग). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'खाली मन' से लेखक का क्या अभिप्राय है, वर्तमान संदर्भ में यह कहाँ तक प्रभाव डालता है ? 'बाज़ार दर्शन' के आधार पर उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का आकर्षण मन की दशा और अपनी आवश्यकता की स्पष्ट पहचान से प्रभावित होता है।

- "खाली मन" का अर्थ केवल खाली जेब या काम का अभाव नहीं, खरीदने के उद्देश्य की अस्पष्टता है।

चरण 1: खाली मन का अर्थ स्पष्ट करें "खाली मन" से लेखक का अभिप्राय उस मन से है जिसमें अपनी वास्तविक आवश्यकताओं और खरीदारी के उद्देश्य का निश्चित बोध नहीं है। व्यक्ति यह जाने बिना बाज़ार जाता है कि उसे क्या चाहिए। फलतः बाज़ार की वस्तुओं का आकर्षण उसके मन को अपनी ओर खींचने लगता है और प्रत्येक वस्तु उपयोगी या लेने योग्य प्रतीत होती है।

चरण 2: पाठ के विचार से प्रभाव समझें ऐसे मन पर बाज़ार का जादू अधिक चलता है। वस्तुओं की चमक-दमक इच्छा जगाती है, इच्छा असंतोष बढ़ाती है और व्यक्ति अनावश्यक सामान खरीद सकता है। इसके विपरीत आवश्यकता का स्पष्ट बोध मन को दिशा देता है। "बाज़ार दर्शन" का विवेक यही है कि मन को अपनी आवश्यकता से भरकर बाज़ार जाएँ, जिससे वस्तुएँ हमारी ज़रूरत पूरी करें और हम उनके आकर्षण के अधीन न हों।

चरण 3: वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता बताएँ आज विज्ञापन, ऑनलाइन खरीदारी, सीमित समय की छूट और निरंतर दिखाई देने वाले नए उत्पाद इस प्रवृत्ति को बढ़ाते हैं। बिना ज़रूरत ऐप या दुकान देखने वाला व्यक्ति आकर्षक प्रस्ताव के कारण अनावश्यक खरीद कर सकता है। इससे धन का अपव्यय और असंतोष दोनों बढ़ते हैं। इसलिए लेखक का विचार आज भी बहुत प्रभावशाली है। आवश्यक वस्तुओं की सूची, बजट और उपयोगिता पर विचार करके खरीदने से खाली मन की इस कमजोरी पर नियंत्रण किया जा सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष "खाली मन" आवश्यकताओं के निश्चित बोध से रहित मन है। वर्तमान उपभोक्तावादी वातावरण में उस पर बाज़ार का आकर्षण अधिक प्रभाव डालता है; आवश्यकता और संयम का विवेक ही उससे बचाता है।

त्वरित सुझाव: "खाली मन" को "खाली जेब" न मानें; अर्थ, बाज़ार का प्रभाव और आज का एक ठोस उदाहरण अलग-अलग स्पष्ट करें।

12(घ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : लेखिका नमक लाने के लिए क्यों प्रतिबद्ध है, इसका क्या संदेश है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी 'नमक' में मानवीय संबंध राजनीतिक सीमाओं से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।
- नमक जन्मभूमि की स्मृति, अपनत्व और साझा सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है।

चरण 1: प्रतिबद्धता का कारण लेखिका सफ़िया से एक सिख बीबी लाहौर का नमक लाने का अनुरोध करती हैं। विभाजन के बाद भारत आ जाने पर भी बीबी का मन अपने जन्मस्थान लाहौर से जुड़ा है। उनके लिए वहाँ का नमक सामान्य खाद्य पदार्थ नहीं, अपने वतन की मिट्टी, पुरानी स्मृतियों और आत्मीय जीवन का प्रतीक है। सफ़िया उनकी इस गहरी भावना को समझती है और नमक लाने का वचन देती है। इसलिए वह उसे पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है।

चरण 2: मानवीय संदेश भारत और पाकिस्तान के बीच नमक ले जाने की पाबंदी तथा सीमा की कठिनाइयाँ सफ़िया के सामने आती हैं। फिर भी वह अपने वचन और बीबी की भावनाओं को महत्त्व देती है। सीमा पर अधिकारियों की जन्मभूमि से जुड़ी संवेदनाएँ भी स्पष्ट करती हैं कि राजनीतिक बँटवारा लोगों की स्मृतियों और आत्मीयता को नहीं बाँट सकता। कहानी का संदेश है कि प्रेम, विश्वास, सहानुभूति और साझी संस्कृति धार्मिक तथा राष्ट्रीय भेदों से ऊपर हैं। दूसरे के दुःख और लगाव को समझना ही सच्ची मनुष्यता है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखिका सिख बीबी से किया वचन निभाने और उनके जन्मभूमि-प्रेम का सम्मान करने के लिए नमक लाने को प्रतिबद्ध है। यह प्रतिबद्धता सीमाओं से परे मानवीय एकता और सद्भाव का संदेश देती है।

त्वरित सुझाव: नमक को केवल खाने की वस्तु न बताएँ; बीबी की लाहौर की स्मृति, सफ़िया का वचन और मानवीय एकता को जोड़कर उत्तर लिखें।

13. 'जूझ' कहानी के नायक के चरित्र की विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालते हुए अध्ययन का महत्त्व समझाइए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव के आत्मकथात्मक पाठ 'जूझ' का नायक शिक्षा के लिए प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष करता है।
- चरित्र की विशेषता को पाठ के प्रसंग से जोड़ने पर अध्ययन के महत्त्व का तर्क स्पष्ट होता है।

चरण 1: परिश्रमी और उत्तरदायी स्वभाव 'जूझ' का नायक आनंदा गरीब कृषक परिवार का लड़का है। वह खेती के काम और पशुओं की देखभाल में हाथ बँटाता है। उसका पिता उसे पढ़ाने के बजाय खेत के काम में लगाए रखना चाहता है। कठिन श्रम करने के बावजूद आनंदा के भीतर पढ़ने की इच्छा बनी रहती है। इससे उसका परिश्रम, पारिवारिक उत्तरदायित्व और अपने भविष्य के प्रति सजगता प्रकट होती है। वह केवल कठिन काम से बचने के लिए विद्यालय नहीं जाना चाहता; शिक्षा से जीवन बदलने की संभावना देखता है।

चरण 2: दृढ़ संकल्प और व्यावहारिक बुद्धि पिता के विरोध से निराश होकर वह पढ़ाई का विचार नहीं छोड़ता। माँ के साथ दत्ता जी राव की सहायता लेता है और उनके हस्तक्षेप से फिर विद्यालय जाने का अवसर पाता है। पिता की शर्तों के अनुसार खेती का काम करते हुए पढ़ना उसके लिए सरल नहीं है, फिर भी वह उसे स्वीकार करता है। यह प्रसंग उसकी लगन, साहस और समस्या का उपाय खोजने की क्षमता दर्शाता है।

चरण 3: जिज्ञासा और सृजनशीलता विद्यालय में वह पिछड़ापन दूर करने का प्रयास करता है। मराठी के अध्यापक न. वा. सौंदलगेकर के सस्वर कविता-पाठ और व्याख्या से उसके भीतर कविता में रुचि जागती है। वह कविताएँ गुनगुनाता और स्वयं रचना करने का अभ्यास करता है। खेत में काम करते हुए भी उसका मन भाषा और कविता से जुड़ा रहता है। अध्यापक का मार्गदर्शन उसकी छिपी प्रतिभा और आत्मविश्वास को विकसित करता है।

चरण 4: अध्ययन का महत्त्व आनंदा का संघर्ष दिखाता है कि अध्ययन मनुष्य को अपनी स्थिति समझने, नया भविष्य बनाने और अपनी क्षमताओं को पहचानने का अवसर देता है। विद्यालय उसे केवल पाठ्यज्ञान नहीं देता, बल्कि संवेदनशीलता, अभिव्यक्ति और स्वाभिमान भी प्रदान करता है। शिक्षा गरीबी से निकलने की संभावना खोलती है; उसे सार्थक बनाने के लिए नायक जैसा परिश्रम और संकल्प आवश्यक है।

चरण 5: निष्कर्ष आनंदा परिश्रमी, दृढ़निश्चयी, जिज्ञासु और सृजनशील है। उसका जीवन सिद्ध करता है कि अध्ययन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी व्यक्तित्व और भविष्य को नई दिशा दे सकता है।

त्वरित सुझाव: हर विशेषता के साथ एक प्रसंग जोड़ें—खेत का काम, दत्ता जी राव की सहायता और सौंदलगेकर का कविता-पाठ—फिर शिक्षा का महत्त्व बताएँ।

अथवा

13. ऐन फ्रैंक ने अपनी डायरी में नारी स्वतंत्रता के बारे में क्या कल्पना की है ? उस स्थिति में आज क्या परिवर्तन आया है, स्पष्ट कीजिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रैंक स्त्री की योग्यता, श्रम और मातृत्व के सम्मान पर आधारित समानता की आकांक्षा व्यक्त करती है।
- वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन उपलब्धियों तथा बनी हुई असमानताओं, दोनों के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: ऐन की समानता की कल्पना ऐन फ्रैंक इस बात पर प्रश्न उठाती है कि स्त्रियों को पुरुषों से कम महत्त्व क्यों दिया जाता है। वह इस धारणा का विरोध करती है कि केवल शारीरिक बल या जीविका कमाने की भूमिका के कारण पुरुष को श्रेष्ठ मान लिया जाए। स्त्री के श्रम, साहस, बौद्धिक क्षमता और समाज में योगदान को भी पूरा सम्मान मिलना चाहिए। उसकी कल्पना ऐसी व्यवस्था की है जिसमें स्त्री को अपनी योग्यता विकसित करने और स्वतंत्र व्यक्तित्व के साथ जीने का अवसर मिले।

चरण 2: मातृत्व और सम्मान ऐन बच्चे को जन्म देने में स्त्री द्वारा सहन किए जाने वाले कष्ट और मानवजाति की निरंतरता में उसकी भूमिका को विशेष महत्त्व देती है। वह चाहती है कि समाज इस योगदान की उपेक्षा न करे और स्त्री को बराबरी का दर्जा दे। उसका आशय केवल स्त्री की प्रशंसा करना नहीं, बल्कि पुरुषप्रधान सोच बदलना और स्त्री को निर्णय तथा सम्मान का वास्तविक अधिकार देना है।

चरण 3: आज आए परिवर्तन आज शिक्षा, रोजगार, राजनीति, विज्ञान, खेल और प्रशासन में स्त्रियों की भागीदारी बढ़ी है। वे अनेक क्षेत्रों में नेतृत्व कर रही हैं और आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त कर रही हैं। समान अवसर और अधिकार के विचार को सामाजिक तथा कानूनी स्वीकार्यता मिली है। परिवार, विवाह और पेशे से जुड़े निर्णयों में अपनी इच्छा व्यक्त करने की उनकी क्षमता भी बढ़ी है। ये परिवर्तन ऐन की कल्पना की दिशा में प्रगति दिखाते हैं।

चरण 4: शेष चुनौतियाँ फिर भी हर स्त्री की स्थिति समान नहीं है। लिंगभेद, घरेलू श्रम का असमान बोझ, हिंसा, असुरक्षा और अवसरों में अंतर आज भी बाधाएँ हैं। इसलिए अधिकारों की घोषणा भर पर्याप्त नहीं है। शिक्षा, आर्थिक अवसर, सुरक्षित वातावरण और परिवार में बराबर जिम्मेदारी के साथ व्यवहार और मानसिकता में परिवर्तन आवश्यक है। तभी ऐन की अपेक्षित स्वतंत्रता जीवन के सभी क्षेत्रों में साकार होगी।

चरण 5: निष्कर्ष ऐन फ्रैंक स्त्री के श्रम, क्षमता और मातृत्व के सम्मान के साथ उसकी समानता तथा स्वतंत्रता की कल्पना करती है। आज पर्याप्त प्रगति हुई है, पर वास्तविक और सर्वव्यापी समानता के लिए प्रयास अभी आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर को तीन सूत्रों में व्यवस्थित करें—ऐन की समानता की अपेक्षा, आज की उपलब्धियाँ और अभी बची बाधाएँ; परिवर्तन को पूर्ण न मानें।

14(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर सिंधु सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सिंधु सभ्यता की विशेषताओं को समझने के लिए उसके नगर-विन्यास, स्वच्छता, कला और सामाजिक जीवन के पुरातात्त्विक प्रमाणों को एक साथ देखना आवश्यक है।
- ओम थानवी के यात्रा-वृत्तांत में मोहनजोदड़ो के अवशेष एक विकसित और सुसंस्कृत नागरिक जीवन की पहचान कराते हैं।

चरण 1: नियोजित नगर और स्वच्छता-व्यवस्था 'अतीत में दबे पाँव' में सिंधु सभ्यता की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी सुव्यवस्थित नगर-योजना है। मोहनजोदड़ो की सड़कों, गलियों और पक्की ईंटों से बने घरों से सुनियोजित निर्माण का पता चलता है। घरों में स्नानघर, कुएँ और पानी की निकासी की व्यवस्था थी। ढकी हुई नालियाँ और विशाल स्नानागार बताते हैं कि वहाँ के लोग सफाई, जल-व्यवस्था और सामुदायिक सुविधाओं को महत्त्व देते थे। इससे उस समय के नागरिक जीवन की उन्नति स्पष्ट होती है।

चरण 2: कला, शिल्प और सामाजिक दृष्टि वहाँ प्राप्त मूर्तियाँ, मुहरें, आभूषण और मिट्टी के बर्तन लोगों की कलात्मक रुचि तथा शिल्पकौशल के प्रमाण हैं। कांस्य की नर्तकी जैसी कृतियाँ उनके सौंदर्यबोध को व्यक्त करती हैं। खेती और व्यापार से भी उनकी आजीविका तथा समृद्धि का परिचय मिलता है। लेखक इस सभ्यता में भव्य राजसत्ता या धर्मसत्ता के प्रदर्शन की अपेक्षा सामान्य नागरिक के जीवन को अधिक महत्त्वपूर्ण पाता है। विशाल राजमहलों और स्मारकीय प्रभुत्व के स्पष्ट प्रमाणों की तुलना में घरों तथा सार्वजनिक सुविधाओं की उपस्थिति उल्लेखनीय है। यहाँ कला और सुरुचि के साथ सादगी तथा उपयोगिता का सुंदर मेल दिखाई देता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार सिंधु सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ सुव्यवस्थित नगर-निर्माण, विकसित स्वच्छता-व्यवस्था, कलात्मक परिष्कार, शिल्पकौशल और नागरिक जीवन के प्रति सजगता हैं। पाठ इसे मानवीय उपयोगिता तथा सौंदर्यबोध से संपन्न सभ्यता के रूप में सामने लाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नगर-योजना, जल-निकासी और कला के ठोस उदाहरण देकर उन्हें नागरिक जीवन की उन्नति से जोड़िए।

14(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है, लेकिन यशोधर बाबू असफल, ऐसा क्यों ? स्पष्ट कीजिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'सिल्वर वैडिंग' में पीढ़ियों का अंतर बदलती जीवन-शैली, पारिवारिक संबंधों और परंपरागत संस्कारों के टकराव से प्रकट होता है।
- समय के साथ ढलने की क्षमता का अर्थ नई परिस्थितियों और संतानों की इच्छाओं को समझकर अपने व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन करना है।

चरण 1: पत्नी की व्यावहारिकता और परिवर्तन की स्वीकृति यशोधर बाबू की पत्नी आरंभ में परंपरागत पारिवारिक संस्कारों से जुड़ी हुई थीं, फिर भी बच्चों के बड़े होने पर उन्होंने बदलती परिस्थितियों को स्वीकार कर लिया। बच्चों के रहन-सहन, उनकी पसंद और आधुनिक ढंग के प्रति उनका व्यवहार अपेक्षाकृत लचीला है। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर आयोजित समारोह को भी वे सहज रूप से स्वीकार करती हैं। वे बच्चों की खुशी में भाग लेना चाहती हैं। उनका व्यावहारिक स्वभाव तथा परिवार के साथ बने रहने की इच्छा उन्हें नई पीढ़ी के अनुकूल बनने में सहायता देते हैं।

चरण 2: यशोधर बाबू की संस्कारबद्धता और मानसिक दूरी यशोधर बाबू अपने पुराने आदर्शों और किशनदा से मिले जीवन-मूल्यों से गहराई से जुड़े हैं। सादगी, कर्तव्य और पुराने सामुदायिक संबंध उनके लिए विशेष महत्त्व रखते हैं। नई पीढ़ी की दिखावे और उपभोग से जुड़ी जीवन-शैली उन्हें असहज करती है। अपने ही विवाह की वर्षगाँठ का आधुनिक समारोह उन्हें अपना नहीं लगता। बच्चों की आर्थिक प्रगति और उनके नए तौर-तरीकों को वे प्रायः पुराने मापदंडों से परखते हैं। इसलिए आत्मीयता की इच्छा रहते हुए भी वे नई परिस्थितियों से सहज संवाद नहीं बना पाते। पत्नी जहाँ बच्चों के साथ चलती हैं, वहीं यशोधर बाबू अतीत की परिचित दुनिया से अपना संबंध बनाए रखना चाहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पत्नी की सफलता का कारण उनका लचीला, व्यावहारिक और संतान के प्रति सहयोगी दृष्टिकोण है। यशोधर बाबू की असफलता पुराने संस्कारों के गहरे प्रभाव और नए जीवन-मूल्यों को सहजता से स्वीकार न कर पाने से जुड़ी है। यह अंतर परिवार में पीढ़ियों के बदलते संबंधों को उजागर करता है।

त्वरित सुझाव: दोनों पात्रों की तुलना करते समय पत्नी की अनुकूलनशीलता तथा यशोधर बाबू पर किशनदा के संस्कारों का प्रभाव अवश्य बताइए।

14(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : पाठशाला पहुँचकर लेखक को किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ा ? उसने उनका समाधान किस प्रकार किया ? 'जूझ' कहानी के आधार पर लिखिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक कहानी 'जूझ' शिक्षा पाने के लिए संघर्ष तथा लगन की शक्ति को सामने लाती है।
- पाठशाला की कठिनाइयों का उत्तर लेखक ने सहपाठियों के सहयोग, परिश्रम और आत्मविश्वास से दिया।

चरण 1: पाठशाला में आरंभिक कठिनाइयाँ लंबे अंतराल के बाद पाठशाला लौटने पर लेखक को अपने से छोटे विद्यार्थियों के बीच बैठना संकोचपूर्ण लगा। उसके कपड़े और बस्ता भी दूसरे बच्चों जैसे नहीं थे। वह धोती और गमछा पहनकर जाता था; उसकी ग्रामीण वेशभूषा तथा गमछे को लेकर कुछ लड़के उसका उपहास करते थे। इससे उसके मन में झिझक और हीनता का भाव पैदा हुआ। पढ़ाई छूट जाने से वह पाठ्यक्रम में भी पीछे था, विशेषकर गणित के प्रश्न समझना उसके लिए कठिन था। इसलिए उसे सामाजिक संकोच और शैक्षिक पिछड़ापन, दोनों से जूझना पड़ा।

चरण 2: सहयोग और परिश्रम से समाधान लेखक ने अपमान से घबराकर विद्यालय छोड़ने के स्थान पर पढ़ाई में मन लगाया। कक्षा के होशियार विद्यार्थी वसंत पाटील से उसकी मित्रता हुई। वसंत की पढ़ाई में तल्लीन रहने की आदत से प्रेरित होकर वह भी अभ्यास करने लगा और कठिन सवाल समझने में उसका सहयोग लेने लगा। नियमित मेहनत से उसकी समझ बढ़ी तथा अध्यापकों का विश्वास प्राप्त हुआ। घर के काम और खेती की जिम्मेदारियों के बीच भी उसने अध्ययन के अवसर खोजे।

चरण 3: आत्मविश्वास का विकास सौंदलगेकर मास्टर के कविता पढ़ाने के ढंग ने लेखक के भीतर साहित्य के प्रति रुचि जगाई। वह कविता को लय में पढ़ने और स्वयं कविता रचने का प्रयास करने लगा। अध्यापक के प्रोत्साहन से उसे अपनी योग्यता का अनुभव हुआ। इस प्रकार मित्र के सहयोग, शिक्षकों के मार्गदर्शन और निरंतर अभ्यास से उसका संकोच घटा और पाठशाला उसके व्यक्तित्व के विकास का माध्यम बनी।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक ने उपहास, झिझक और पढ़ाई में पिछड़ने की कठिनाइयों का समाधान धैर्य, वसंत पाटील के सहयोग तथा शिक्षकों की प्रेरणा से किया। उसकी संघर्षशीलता ने शिक्षा की राह में आत्मविश्वास दिया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में हर कठिनाई के साथ उसका समाधान जोड़ें और वसंत पाटील तथा सौंदलगेकर मास्टर की अलग-अलग भूमिकाएँ स्पष्ट करें।

14(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : ऐन फ्रैंक की डायरी के आधार पर किशोर वर्ग की मानसिक स्थिति पर अपने विचार लिखिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रैंक की डायरी किशोर मन की संवेदनशीलता, आत्माभिव्यक्ति की आकांक्षा और अपने व्यक्तित्व की पहचान के संघर्ष को प्रकट करती है।
- किशोरावस्था की सामान्य भावनाओं पर युद्ध, भय और बंद जीवन का प्रभाव भी इस पाठ में दिखाई देता है।

चरण 1: समझे जाने और अभिव्यक्ति की इच्छा ऐन के अनुभव बताते हैं कि किशोर अपने विचार और भावनाएँ किसी विश्वासपात्र के सामने रखना चाहते हैं। परिवार तथा परिचितों के होते हुए भी उन्हें ऐसा लग सकता है कि उनकी आंतरिक बातों को पूरी तरह समझने वाला कोई नहीं है। ऐन ने अपनी डायरी को आत्मीय मित्र मानकर उससे संवाद किया। इससे स्पष्ट होता है कि किशोर की बाहरी चंचलता के पीछे अकेलापन, असुरक्षा और आत्मीय संबंध की गहरी आवश्यकता भी हो सकती है।

चरण 2: स्वतंत्र पहचान और संबंधों की उलझन किशोर न तो स्वयं को छोटा बच्चा मानते हैं और न उन्हें वयस्क जैसी स्वतंत्रता मिलती है। ऐन बड़ों की टिप्पणियों, रोक-टोक और अपने बारे में बनी धारणाओं से आहत होती है। वह अपने व्यवहार पर विचार भी करती है और अपनी अलग पहचान स्वीकार कराना चाहती है। पीटर के प्रति उसका आकर्षण आत्मीयता तथा समझे जाने की चाह को व्यक्त करता है। अतः किशोर की भावनाओं को केवल जिद या अस्थिरता कहकर टाल देना उचित नहीं है।

चरण 3: परिस्थितियों का प्रभाव और अपेक्षित व्यवहार यहूदियों पर अत्याचार और छिपकर रहने की विवशता ने ऐन की स्वाभाविक इच्छाओं को सीमित किया। भय के बीच भी उसमें प्रेम, प्रकृति, भविष्य और लेखन के प्रति उत्सुकता बनी रही। इससे किशोर मन की संवेदनशीलता के साथ उसकी आशा और सृजनशीलता का भी पता चलता है। मेरे विचार में बड़ों को किशोरों की बात धैर्य से सुननी चाहिए, उनके निजी भावों का सम्मान करना चाहिए और संवाद द्वारा मार्गदर्शन देना चाहिए। विश्वास तथा सहानुभूति उनके व्यक्तित्व को स्वस्थ दिशा देते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन की डायरी के आधार पर किशोरावस्था भावनात्मक उतार-चढ़ाव, आत्मीयता की चाह और स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास का समय है। किशोरों को संवेदनशील संवाद, सुरक्षा और अपनी बात कहने का अवसर मिलना चाहिए।

त्वरित सुझाव: किशोर मन पर सामान्य टिप्पणी के साथ डायरी को मित्र बनाना, बड़ों से मतभेद और भय के बीच आशा जैसे पाठाधारित उदाहरण जोड़ें।